तंत्र कौमुदी
सौन्दर्य तंत्र और कायाकल्प तंत्र महाविशेषांक
Sixth iSSue – August 2011
PART-II
Tantra kaumudi

TANTRA KAUMUDI - AUGUST 2011

PART – II

Tvameva Mata cha , Pita Tvameva,

Tvameva Bandhu cha Sakha Tvameva,

TvamevaVidya Dravinam Tvameva,

Tvameva Sarvam Mama Deva Deva.

परम आदरणीया , परम वंदनीया श्री माँ ,

आपके दिव्य श्री चरण कमलों में आपके ही ,हम सभी मानस पुत्र ,पुत्रियों का अनंत कोटि प्रणाम ,आप स्वीकारे

SAMMOHAN SE SOUNDARY PRAPTI

एक अत्याधिक सरल विधि ....

हमारी साधना विधियों में सभी विधि अपने आप में श्रेष्ठ हैं सभी अपने आप में विशिस्ट हैं हर का अपना ही एक महत्त्व हैं , इस इसी श्रंखला में आप सम्मोहन विज्ञानं को रख सकतेहैं भले ही यह आज मान लिया जाता हो की यह पाश्चात्य देशो में पला बड़ा हुआ हैं पर वास्तव में इस विज्ञानं की नीव भी हमारी सनातन संस्कृति में हैं ही .पर इस के माध्यम से आप व्यक्ति की अन्तः मन की व्याधि या कमिया दूर करसकते हैं पर सौन्दर्य यह कैसे यह दे सकता हैं ...

सौन्दर्य के मूलभूत दोप्रकार हैं पहला तोजो बाह्यगत हैं दूसरा जो अंतर गत हैं और दोनों का जिसमे सही समन्वय हुआ हो वही सौन्दर्य किपरिभाषा में खड़े होने के लायक हैं , बौद्धिक के साथ मानसिक सौन्दर्य की अपना एक अलग महत्त्व हैं ..

हमसभी अधिकतर बाह्यगत सौन्दर्य की ही अधिक मान्यता रखते हैं , पर वह जो बाह्यगत प्रतिफलित हो रहा हो वह अंतर मन की खूबसूरती पर ही तो निर्भर होगा अन्यथा उसका आधार तो अंतर ही होगा न , पर अंतर मन अपने आप में इतनी विसंगतिया लिए हुआ हैं कि मानव को कहा जाये की वह पागलपन की आखिरी सीमा पर खड़े हुए दुसरे को पागल कह कर हस रहा हैं पर यह स्वयं भूल जाता हैं की यदि वह स्वयं जीवन का अर्थ का सही आकलन करे तो शयद कुछ लोग ही उसे मानसिक स्वास्थ्यकहेंगे या निकलेगे, पर इन विसंगतियों को कैसे दूर किया जाये . बस ठीक यही सम्मोहन काम में आता हैं , यहाँ सम्मोहन भी अनेक प्रकार का हो सकता हैं प्रथम तो जिसे हम चाहते हैं उसे सम्मोहित करेऔर अपने अनुकूल बनाये ,

वही दूसरी ओर यह विचार हैं की एक एक करके किस किस को सम्मोहित करते रहेंगे , क्या कोई ऐसी विधा हैं की जिसके माध्यम से जो कोई हमें देखे वह स्वयं ही सम्मोहित हो जाये .

अरे इसका उत्तर हैं हां "आत्म सम्मोहन" एक ऐसी विधा हैं जिसके माध्यम से यह संभव हैं.

पर यदिकोई आत्म सम्मोहन मे दक्ष नहीं हो पा रहा हो तो मंत्रात्मक विधान उपयोग करे,क्योंकि जब हमारा व्यक्तित्व स्वयं ही सम्मोहन के लिए लिए तैयार होगा तो हममें स्वयं ही वह गुण उत्त्पन्न होगा .

यहाँ मेरा तात्पर्य अपने व्यक्तित्व मे चुम्बकीयता उत्पन्न करना भी हैं , साथही साथ समग्र रूप से अपने में आकर्षण भी उत्पन्न करना हैं , यहाँ ....यह तो एक मिनिट में नहीं होसकता हैं की आपकी उचाई एक दम से बढजाये नहीं ...एकदमसे आपके चेहरे का रंग रूप बदल जाये पर पर इतना हैं की आप जहाँ होंगे वहा पर आपके चारो तरफ एक ऐसा वातावरण साथ होगा जो अपने आप में एक लावण्यता और आकर्षण स्वत ही उत्पन्न करता जायेगा ,

यहाँ एक बात अच्छी तरह से समझ जाये की चेहरे में सबसे पहले किसी भी व्यक्ति के नेत्र ही पहला बिंदु होता हैं जो आपको दृष्टी गत होते हैं तोक्योंना इसे ही चुम्बकीयता से जोड़ दिया जाये , आप यदि साधरण त्राटक करपाने से किसी भी तरह से असमर्थ पाते हो , इस विधि को भी अपनाये, किसी भी दर्पण के सामने बैठ कर स्वयं को भावना दे की आपमें आकर्षण हैं आप में सम्मोहन क्षमता हैं , आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली हैं , यह स्व सम्मोहन की विधि धीरे धीरे आपमें यह गुण उत्पन्न करती जाएगी .

थोडा सा अपनी चाल में संतुलित ता लाये , ध्यान दे किकिस तरह आपको जिन भी व्यक्ति की बाते या व्यक्तित्व आकर्षित करता हैं वह किस तरह से बोलते हैं आपको उनकी नक़ल नहीं करना हैं बल्कि आपको जो भी अच्छा हैं जहाँ भी अच्छा मिले उसे पूरे मन से स्वीकार करते जाना हैं धीरे धीरे आप पाएंगे आप में वह गुण स्वतः ही आते जा रहे हैं वस्तुतः कोई भी गुण बाहर से नहीं आता बल्कि सारे गुण तो हमारे अन्दर सुसुप्त अवस्था में रहते हैं बस जरुरत हैं की उन्हें पहचान कर उनका इस्तेमाल करना सीखे .

सदगुरुदेव जी द्वारा लिखित 'आधुनिक हिप्नोटिस्म के १०० स्वर्णिम सूत्र " में आपको ऐसे अनेको सूत्र मिलेंगे जिन्हें आप अपने जीवन में इस्तेमाल कर , यदि आपके पास समय नही हैं कि आप मेहनत करके एक अच्छे सम्मोहंविद बन पाए पर आप में सदगुरुदेव द्वारा लिखित सूत्र निश्चय ही आकर्षणता का अमृत घोल देंगे .

फिर भी आप चाहे तो "नेत्र चुम्कत्व दीक्षा " आत्म सम्मोहन दीक्षा " जैसी उच्च कोटि की दीक्षाओ के लिए सदगुरुदेव जी से प्रार्थना कर प्राप्त करे . फिर जब आपके बाह्य मन और अंतर मन में समन्वय होगा तो पूरा शरीर एक सांचे में ढलता जायेगा . फिर क्यों कोई न आकर्षित होगा , और क्या यहभी एक सौन्दर्य नहीं होगा

Attaining sundary through hypnotism

Each sadhana marg in our sadhan jagat is very special and unique and show a direction where everything what we want can be achieved , so no path is lesser in sadhan jagat and also having equal important one. In this series you can also include hypnotism science, through common believe that this science gain its modern importance/shape because of western world, but actually this science has also a root in our sanatan sanskriti. And through that all the inner hidden complexity/problem of any person can be removed. But how this can be helpful in gaining beauty..

Beauty has mainly two dimension one that is outer one and second one is inner beauty, where theses two has got balance that one can be considered beautiful or on justify on the definition of beauty, and not only intellectual beauty but inner heart beauty is also needed.

We all ,considered generally outer beauty is beauty, but what that which reflected outwardly definitely depends upon the beauty of inner heart on some extent, but inner side has so many hidden short coming/weakness/complexity ,considering all that , if one can say that today , human being is on the verge of madness, that would not be so wrong, we are standing on that marking/dividing line and laughing on others , but often forget that if we truly analyze our self than we will know where are we going in term of madness. Very few people will be considered metal healthy. but how can these negativity lies in our inner can be removed and help us to find beauty , than here is the point where this science comes. This can be of two type first-to whom we love, through sammohan we can get more and more co operation from them .

And other is, that how long and how many people we need to hypnotism in order to have balanced in life?, is there any process through which people automatically get smmohit just seeing us?.means again here this science introducing beauty in us.

Answer is that yes “aatm sammohan” is the process.

But if any one is not getting expertise in aatam sammohan because of lacking time or any other reason so he can use mantra process, when such sammohan quality are coming or start gaining ground in us its quite natural that our inner or outer beauty has some impact..

Here I mean that person has to develop/induces magnetism in his personality. and whole personality must have attractiveness . here .. this can not be possible that in one minute your height will increase neither your face color will be changed.and you will become film star. but its true that where ever you go ,you will be centre of attention. Your personal magnetism generated by this science will help you.

Here kindly note when wh see other face it's the eye that get first attention, so why not magnetism can be induced in that, if you are unable to do Tratak process because of morning tight schedule.

try this simple process. Sit in front of any mirror available in your home and on seeing that start suggesting your self inwardly that you are having beauty, you are having good behavior and magnetism coming in your eyes..

This process will work for you. though this process is very simple but try that ….

And addition to that

One person must be always attentive one, and where ever you have a chance to meet a person whom you like most, try to notice what are the good quality of him you like most and try to induce in your behavior slowly and slowly and remember do not become copy of him .but when you try to introduce that quality in you , you will find your body will start changing, .all the quality already lies in our heart and only need to recognize that.

Sadgurudev ji wrote a book named "adhnik sammohan vigyan ki 100 swaarnim sutras. You will surely find so many sutra and application of that surly leads to generated a great change in you

Than you can have "nertra chumbkattv Diksha", and "aatm sammohan Diksha" than surely a personality will be more inner and our beauty. So sammohan can also bring beauty. your strong will power and attitude and will to change and ready to go for application of this science surely lead to a success and such a beauty that not easy to achieve by others.

मेरा अनुभव एक बेहद ऋणात्मक योग के साथ : केमद्रुम योग

MY EXPERIENCE WITH MOST HARMFUL YOG – KEMDRUM YOG

कैसे करे इसका सामना क्या कोई उपाय हैं

मानव जीवन में ग्रहोंका प्रभाव तोकेबल इस तरह न ही नकारा जा सकता की वह कोई व्यक्ति विशेष इसे नहीं मानता, केबल कोई यह मान ले की बिजली के तार से बिजली का प्रवाह नहीं हो रहा हैं और उसे वह छू ले जिस समय उसमे से विजली प्रवाहित हो रही होगी तो उसे भी बिजली का झटका लगेगा , और उसे भी जो इसे मानता हैं , मानव के विस्वास और अनुभव पर यह विश्व टिका नहीं हैं अन्यथा अभी तक सम्पूर्ण विश्व में हाहाकार मच गया होता , अभी अनेको पृष्ट के रहस्य सामने आना बाकि हैं हर विज्ञानं की अपनी सीमाए हैं उसका एक्महत्व हैं उसे नकारने से पहले उसके बारेमें खुद भी अध्ययन भी तो करे , तब स्वयं ही देख ले, एक सच्चे विज्ञानी कीतरह किसी भी विज्ञानं को सच्चाई परखने केलिए

एक वैज्ञानिक दृष्टी कोण अपनाये , फिर उसके धनात्मक ओर ऋ णा त्मक गुणों को देखें .

नाकि पहले से ही पूर्वाग्रह से ग्रसित हो कर एक ऐसी शोध में लगे जिसे की मानो आपको सिद्ध करना हैं की यह विज्ञानं अ प्रमाणिक हैं तो आप ऐसे अनेको उदहारण ढूढ लायेगे जो बता देगा की यह सही नहीं हैं वहीँ मानलो आपको सिद्ध करना हैं तो आप ऐसे अनेको उदाहरण ढूढ लायेगा जिससे यह सिद्ध होता हैं की यह बिलकुल सत्य हैं , तो इस तरह की तर्क /वितर्क में फसने से अच्छा हैं की कुछ बाते तथ्यात्मक देख ले .

१९९३/९४ मेंजब ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन कररहा था, तो मन मे सदगुरुदेव जी यही दिया सूत्र था की "केबल बाबा वाक्य प्रमाणं " न मानना, स्वयं भी हर योग को अपनी कसोटी पर कसना और जब संतुष्ट हो जाओ तो फिर आगे बढ़ते चलो ये सूत्र तुम्हे रास्ता दिखाए पर इन्हें पकड़ कर ही नहीं बैठ जाना और अपने आपको विख्यात ज्योतिष न मान लेना और अपनी दुकान न खोलने लग जाना बल्कि इसका अध्ययन यह मान कर कर करना प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रतिपादित यह भारतीय ज्योतिष विज्ञानं भी धीरे धीरे व्यक्ति केमन से उसका अहंकार मिटाता जाता हैं और उसे एक विश्व से जोड़ता जाता हैं. यह भी तो एक साधना हैं जो मानव समाज के काम की हैं न किकेबल उदर पूर्ति का एक साधना , जो जीवन से हार चुके हैं वे आजीविका के लिए नहीं बल्कि जो श्रेष्ठ हैं योग्य हैं वह भी तो इसे आजमाए , आगे आये ,इसे परखे , और समाज उपयोगी बने ..

कुंडली शास्त्र का अध्ययन करते समय एक योग ने मेरा ध्यान आकर्षित किया वह था "केमद्रुम योग ". जिसके बारे में सदगुरुदेव जी ने लिखा हैं " भारतीय योग चन्द्रिका" में ,की चाहे हजारों राज योग हो पर यह योग उनसभी योग को नष्ट कर देता हैं और व्यक्ति को बहुत की कठिन परेशानी और अपमानित जीवन के पक्ष से उसका बार बार सामना करता रहता हैं . व्यक्ति चाहे जितनी कोशिश करता हैंपर सफलता उसे बहुत मुश्किल हैं . निश्चय ही इसे भयकर योग को हर कोई व्यक्ति अपनी कुंडली में नहीं देखना कहेगा ,

पहले हम समझ ले की कुंडली में जब जिस भाव में चन्द्रमा हो उसके आगे पीछे भावो मेंकोई गृह न हो ,तब इस योग का निर्माण होता हैं .

मैंने तत्काल अपनी कुंडली में देखा यह योग नहीं पाया तो राहत की साँस ली ,मैंने अब मैंने जितने परिचित हैंसभी कुडली में यह योग ढूंढ ना प्रारंभ किया किया मेरे एकमित्र की कुंडली में यह यह योग मिल गया , वे अत्याधिक मेधावी थे और इंजीनियरिंग की शिक्षा की प्राप्त करने के बादभी एक अच्छा जॉब नहीं पा रहे थे .(उस काल में जॉब पाना इतना आसन भी नहीं था चारो और बेरोजगारी की बेहद बड़ी समस्या से देश जूझ रहा था) उन्होंने बहुत कोशिश की पर हर जगह यह योग अपना असर दिखा भी देता था .

की इसका निराकरण किया जाये हम नहीं जानते थे तो कुछ निराश होना स्वाभाविक भी था . की की क्या जाये

तभी एक दिन पत्रिका में सदगुरुदेव ने "राज्याभिषेक दीक्षा " के बारे में दिया , उस दीक्षा के बारे में क्या कहा जाये जितना लिखो मानो सूर्य को दीपक दिखाने के समान ही हैं , सदगुरुदेव भगवान् ने भी लिखा था , इसको मत चूकना अन्यथा यह दीक्षा यह तो करोंडो जीवन के पुण्य फलो का उदय हैं , पिछले पांच हज़ार साल मे कुछ लोग ही यह दीक्षा ले पाए हैं ,क्योंकि कोई दे सके ऐसा व्यक्ति मिलना संभव कहा हैं,

मेरे मित्र को समझा दिल्ली जा कर कर हम दोनों ने यह दीक्षा प्राप्त की , (तीन या पांच भागोंमे यह शिविर देखना भी विडियो cd में भी सौभाग्य हैं)सदगुरुदेव कह रहे थे की आज से तुम्हारा भाग्य में लिखूंगा , अब कहे कोई ज्योतिषकी तुम्हारी कुंडली यह या वह बुरा योग हैं उससे कह देना की उसे अपने पास ही रखो ,अब सदगुरुदेव मेरे भाग्य विधाता हैं मेरी कुंडली में वह बैठे हैं .)

उस दीक्षा लेने के बाद कुछ समय के अंतराल के अन्दर मेरे मित्र एक जॉब पा गए हाँ उनकी मेहनत को कम कर के नहीं देख रहा हूँ , आज वे छतीस गढ़ राज्य में भारतीय रेलवे में एक उच्च पदाधिकारी हैं हाँ यह समय का फेर कहे अपना भाग्य की अब पद और धन , परिवार सम्पत्ति पाकर अब बे सदगुरुदेव और साधना से कोसों दूर हैं .

तो किसी भी ज्योतिष योग से घबराए नहीं ,सदगुरुदेव पर आस्था रखे और किसी स्थिति में अपनी साधना से विमुख न हो , जरा सोचिये जिसके भाग्य में उस काल में सामान्य से जॉब में समस्या आ रही थी अब वह कहाँ हैं, तो आप क्यों नहीं उन्नति कर सकते हैं

क्या मुझे कुछ ओर लिखना होगा ...

सदगुरुदेव की कृपा स्नेह के बारे में मेरी लेखनी भी असमर्थ हैं लिखने में

उसे आप स्वयं समझ सकते हैं ...

** ***My experience with kemdrum yog – a highly negative Yog***

One cannot denied the effect of planet s on human merely on the ground that he or some one special not believe on this . suppose someone does not believe that electricity is flowing in the wire and touch the open wire bare hand on the time when electrify is flowing what will happened ?, and same will be the result felt by who believe in that . the whole universe is not depend upon this limited human being knowledge and faith /belief , if so than whole universe will collapse in a sec. since many mystery still waiting for us.

every science has some limitation and some boundary , and has an importance , one should learn and know some concrete before rejecting it. To be a true scientist one should has an approach to check the things as an scientist do.

properly weight both pro and con of that and then decide,, ,one should proceed his research without having pre reservation in his mind like suppose if one want to proof that this science is true than he will produce or search so many fact that will supportive to his belief, and if one does not want to proof that this science is true so in reverse he will give so many facts that will be supportive to his view, so in wondering such logic and illogic fight , see some facts..

When in 1993/94 when I was studying in astrology vedic aspect. i always keep in my mind and heart that Sadgurudev advice us that do not believe blindly what the high ups said , do test and when that will become your truth than accept and move forward , here I am giving you some direction follow that but do not stick to them, have search your own way, not to be famous astrologer in the beginning and open a shop, but always have faith that science is advocated and searched by our ancient rishis must have some truth, and this is not for one, who could not get the job and take this as a just for earning bread and butter, but some scholar and intelligent one come forward to learn this science and become help ful for guiding other, and through astrology one ego destroyed, and treat this science as a sadhana not as a job.

While studying astrology one yog attract my eye I s the kemdrum yog, on that sadgrudev ji has written only this yog if present any horoscope than even the thousand raj yog , has been destroyed and person will faced every type of bad circumstance and every worse condition,, even he tried his best but could not get success, so its quite natural that no one want to have this kind of negative yog in his horoscope,

How this yog formed if you have in your horoscope both adjacent bhav backward and forward one from where moon is situated , blank/empty means no planet than this yoga is formed.

When I checked mine horoscope and that yog was not present in that, I feel relax, than I started searching this yoga if any one of mine near and dear one has , one of mine closet friend has that yoga. In spite of extremely intelligent and completed engineering degree, he was not able to find a job (in that era to find a job was not like toady it was very very difficult ,whole nation was facing the problem of unemployment) he tried every where but each time this yog shows its effects,

Now what to do , we did not know so he was very frustrated and rejected too., but what we could do,

Than one day in our mag sadgurudevji written that he was not ready to give "rajyabheshek Diksha" what can be written about that Diksha , thousand page will be less in mentioning its effects . Sadgurudev Bhagvaan had written that do not loose this opportunity , this is the result of your good karma of last so many thousand birth. And in last five thousand only some few people has taken this Diksha since , where one can find a person who the vidhan of this divine Diksha .

I told mine friend about that and we both moved to Delhi to take this Diksha (that video cd still available even listening that is a great luck a for any one. In that Sadgurudev told that now onwards I will decide your future and if any one says to you that this or that bad yoga present in your horoscope tell him, mine Sadgurudev is in mine horoscope and keep this bad yoga in yourself. Mine Sadgurudev ji is mine fortune writer.)

After taking that diksha mine friend has got a job, and here I am not taking his hard word underestimated but now toady he is working as a high post officer in Indian railway in chhittis garh . yes now having got name fame , family finance, but he is now far away from Sadgurudev ji and sadhana, what can be said only his luck ..)

So never afraid to any bad yoga if having in your kundali and you are facing problem related to that have faith in Sadgurudev and in your sadhana, see that fellow who has such you now where he is today.

May I have to write more .

Writing about Sadgurudev jis compassion and blessing is beyond mine capability

You can feel in your heart ..

KAYA KALP & SOUNDARY RAHSY
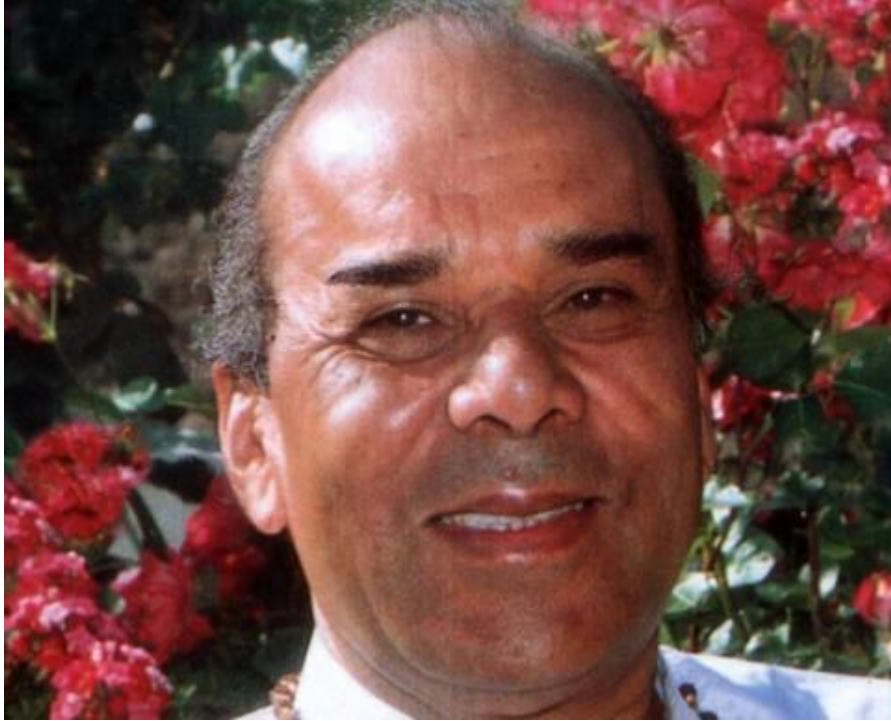
सौंदर्य के आधार हैं यह परम गोपनीय सूत्र केबल आपके लिए पहली बार

सदगुरुदेव की आज्ञानुसार जब मैं उनके संन्यासी शिष्य प्रज्ञानंद जी से मिला था और उनसे कायाकल्प का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा था(श्वेत बिंदु और रक्त बिंदु लेख माला में आपने इस विज्ञान से सम्बंधित रहस्यों को ब्लॉग पर अवश्य पढ़ा ही होगा) उन्ही के सान्निध्य में मैंने इस विषय से सम्बंधित जिज्ञासाओं का शमन प्राप्त किया था. वहाँ से वापिस २ महीने में हम पचमढ़ी पहुचे थे .

जहाँ उन्होंने मेरी मुलाकात सौंदर्या माँ से करवाई थी.यहाँ एक बात मैं आप सभी के बताना आवश्यक समझता हूँ की सदगुरुदेव के सान्निध्य में विभिन्न गृहस्थ और संन्यासी शिष्यों ने विभिन्न साधनाओं के क्षेत्रों में सफलता पायी हैं या ये कह लें की पात्रता या शोध कार्यों के अनुसार किसी खास साधनाओं के रहस्यों को सदगुरुदेव ने शिष्यों को प्रदान किया है,

और उन शिष्यों को उसी क्षेत्र विशेष में आगे बढ़ाया है.जिसके परिणाम स्वरुप आज वे शिष्य उन साधनाओं में विविध आयामों की प्राप्ति कर एक कीर्तिमान बना सके.

खैर माँ का निवास बड़ा महादेव की गुफा से पीछे की तरफ घने जंगलों में है जहाँ पर वे अपने आश्रम में आज भी साधनाओं के विभिन्न रहस्यों को जानने और उचित साधकों को ज्ञान प्रदान करने के कार्य में लगी हुयी हैं.सौंदर्य साधनाओं और अप्सरा यक्षिणी साधनाओं का ऐसा रहस्य शायद ही आज किसी और साधक के पास हो जैसा सदगुरुदेव ने उन्हें प्रदान किया है. और मेरा भाग्य तो उस समय हीरक कलम से लिखा गया था,तभी तो कायाकल्प तंत्र के ज्ञाता स्वामी प्रज्ञानंद जी और सौंदर्य साधनाओं में अग्रणी सौंदर्या माँ का सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ था,और यही उचित अवसर था मेरी जिज्ञासा की भूख को शांत करने का तो बस फिर मानो मैंने तो प्रश्नों की झड़ी ही लगा दी थी और उतनी ही तीव्रता से मुझे उनके उत्तर भी प्राप्त होते चले गए.उस दिन मुझे यकीन हो गया की विज्ञान सही कहता है की 'क्रिया के सामानांतर उतने ही वेग से उसकी प्रतिक्रिया भी होती है.' है ना.

प्र० **कायाकल्प क्या है ?**

उ० इसके लिए सबसे पहले कायाकल्प शब्द का अर्थ समझना आवश्यक है. काय शब्द का अर्थ शरीर तो होता ही है ,परन्तु ये एक महत्वपूर्ण तत्व अग्नि को भी दर्शाता है.अर्थात ये अग्नि का भी पर्यायवाची है-

"जाठर: प्राणिनां अग्निः काय इत्यभिधीयते"

समस्त प्राणियों की की जठराग्नि को काय शब्द से उच्चारित किया जाता है,इसीलिए कहा गया है की अग्नि के ठीक रहने से मनुष्य भी स्वस्थ और निरोग रह सकता है.

इसी प्रकार इस उक्ति को भी यहाँ ध्यान में रखना अनिवार्य है कि-

"अग्नि मूलं बलं पुंसां रेतोमूलम च जीवनं,तत्समात् सर्व प्रयत्नेन वह्निं शुक्रं च रक्ष्येत्"

यहाँ पर तंत्र,योग और आयुर्वेद एक ही बात कहते हैं कि मनुष्य के बल का मूल स्त्रोत अग्नि ही है और जीवन का मूल वीर्य ही है,अतः सभी प्रकार से अग्नि और वीर्य की रक्षा मानव को करना ही चाहिए. अग्नि से तात्पर्य ताप से भी है और हम सभी जानते हैं की मानव शरीर का ताप नष्ट हो जाने पर मनुष्य मृत समझा जाता है,मानव शरीर में कई प्रकार की अग्नि होती हैं ,जिनके विकृत होने पर मनुष्य रोगी समझा जाता है.तभी तो भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है की-

"अहम् वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रीतः

प्राण: अपान समायुक्तो पचाम्यनम् चतुर्विधं"

अर्थात मैं वैश्वानर (अग्निरूप) होकर प्राणियों के शरीर में वास करता हूँ और प्राण,अपान,समान वायु के द्वारा खाद्य,पेय,लेह्य और चव्य इन चारों प्रकार के अन्नों को पचाता हूँ.

और प्रत्येक प्राणी की चार अवस्था होती है, इसमें से किसी भी अवस्था में जठराग्नि और वीर्य के कमजोर और दूषित होने पर तीव्रता के साथ वृद्धावस्था की और अग्रसर होने लग जाता है. परन्तु जिस विद्या के द्वारा काय को प्रदीप्त कर शरीर को पुनर्योवन प्रदान किया जाता है ,उसे कायाकल्प कहा जाता है.

प्र० **आपने सिर्फ अग्नि और वीर्य को ही जीवन का मूल माना है,जबकि ये सृष्टि तो पंचभूतात्मक अर्थात पञ्च तत्वों यथा पृथ्वी,जल,अग्नि,आकाश और वायु से निर्मित है?**

उ० बेटे तुम्हारा कथन अपनी जगह सही है,परन्तु एक गूढ़ रहस्य भी है इसमें जिसकी जानकारी हमें होना ही चाहिए .और वो ये है की भले ही ये सृष्टि पंचभूतात्मक है परन्तु इसमें आकाश आच्छादन में,पृथ्वी धारण में और वायु सहयोगी मात्र रह जाता है. निर्माण मात्र जल और अग्नि के द्वारा ही होता है और विकृति भी इन्ही दोनों के कमजोर पड़ने और दूषित होने से होती है. वस्तुतः कायाकल्प अग्निकल्प ही है क्यूंकि जलीय विकृति आदि का व्यवधान को शस्त्र-कर्म से दूर किया जा सकता है,किन्तु किसी भी चिकित्सा पद्धति में अग्नि से उत्पन्न विकृति को शस्त्र कर्म से दूर नहीं किया जा सकता,इसीलिए कायाकल्प को अग्नि की चिकित्सा भी कहा जाता है.

प्र० **कायाकल्प और सौंदर्य में क्या भेद है ?**

उ० कायाकल्प का अर्थ होता है किसी भी पदार्थ में कालानुसार क्षरण की क्रियाओं के फलस्वरूप जो विकृति हुयी हो उसका रूपांतरण कर पुनः मूल रूप देना ठीक वैसा ही जैसा वो या तो क्षरण के पहले था या फिर जैसा हम चाहते हैं.वस्तुत इस क्रिया को संपन्न करने के विभिन्न चरण होते हैं और साथ ही विशिष्ट माध्यमों का प्रयोग कर ये क्रिया की जाती है. और मात्र कायाकल्प से ही तो कार्य संभव नहीं हो पाता है बल्कि उस पदार्थ ,तत्व,धातु या फिर प्राणी के भीतर उपस्थित वह ऊर्जाजिससे बाह्य जगत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हो,उस ऊर्जाका स्तर तथा मात्रा को सकारात्मक रूप से परिवर्तित कर उसका प्रवाह अन्तः शरीर के साथ बाह्य शरीर पर भी करना और उसे स्थायित्व प्रदान करना.**यही क्रिया सौंदर्य गुण की प्राप्ति कहलाती है. वस्तुतः कायाकल्प और सौंदर्य एक दुसरे के बगैर अधूरे ही हैंऔर इन दोनों का योग तंत्र के द्वारा ही हो सकता है.**

प्र० **आप ने कहा की इन क्रियाओं के संपादन हेतु किसी विशिष्ट माध्यम की आवश्यकता होती है,तो वे विशिष्ट माध्यम कौन कौन से हैं?**

उ० इसके लिए उन वनस्पतियों,मन्त्रों,धातु,तत्व या प्राणियों का प्रयोग किया जाता है जिनमें धनात्मक ऊर्जा की प्रचुर मात्रा में प्रधानता होती है. इन के प्रयोग से ही कायाकल्प और सौंदर्य की क्रियाओं को पूर्णता दी जाती है.क्यूंकि दोनों ही क्रियाओं में उपादान में ऋणात्मक गुणों का परिवर्तन धनात्मक गुणों में किया जाता है या उपादान में धनात्मक ऊर्जा का विस्तार किया जाता है.

प्र० **कायाकल्प करने के लिए आयुर्वेद का प्रचलन तो है ना,फिर इसमें तंत्र का क्या योगदान है ?**

उ० आयुर्वेद मानव जीवन की स्वस्थ रहने की कामना पूर्ण करने में सहायक है, सदैव से मानव के मन में स्वयं अजर,अमर होने की तीव्र उत्कंठा रही है. और आयुर्वेद का समन्वय जब तंत्र से हो जाता है तो इस उक्ति को भी सिद्ध किया जा सकता है जो की यजुर्वेद मानव से कहता है कि –

"जीवेत शरदः शतम् .....भूयश्च शरदः शतात्'

अर्थात हम १०० वर्षों तक स्वस्थ रहने के पश्चात पुनः १०० वर्ष जियें. इसी आयुष्कामना के लिए आयुर्वेद को तीव्रता प्रदान करने के लिए तंत्र और आयुर्वेद का समन्वय किया जाता है. **तंत्र का अर्थ ही होता है एक निश्चित पद्धति के साथ किसी कार्य को गति देकर मनोवांछित परिणाम की प्राप्ति करना**. और तंत्र समस्त आंतरिक और बाह्य विकारों को नष्ट कर गुणों को परिष्कृत करता है ,सौंदर्य की प्राप्ति करवाता है और इसी कारण जब कायाकल्प के साथ सौंदर्य का समावेश हो जाता है तो यही सही अर्थों में कायाकल्प कहलाता है.और **जिस तंत्र के द्वारा ये अद्भुत क्रिया संपन्न की जाती है उसे कायाकल्प तंत्र कहा जाता है,सौंदर्य तंत्र कहा जाता है** क्यूंकि इसमें बाह्य उपादानों के साथ साथ तांत्रिक विधियों और दिव्य मन्त्रों का भी प्रयोग किया जाता है. तांत्रिक क्रम और मन्त्रों के योग से ये क्रिया तीव्र भी होती है और इससे प्राप्त परिणाम में स्थायित्व भी होता है

प्र० **यूँ तो आयुर्वेद में विभिन्न वनस्पतियों या सामग्रियों का योग कर कल्प का निर्माण करने का विवरण प्राप्त होता है परन्तु वे कौन कौन सी दिव्य वनस्पतियां हैं जो मनुष्य को वीर्यवान कर मात्र उनके अपने प्रयोग से सौंदर्य प्रदान कर कायाकल्प कर देती हैं और पारद का इसमें क्या महत्वपूर्ण भाग है ?**

उ० वैसे तो विभिन्न प्रकार की विकृतियों के लिए भिन्न भिन्न वनस्पतियों का कल्प रूप में सेवन करवाया जाता है परन्तु पूर्ण कायाकल्प के लिए जिन वनस्पतियों का प्रयोग किया जाता है वो हिमालय में अधिक मात्र में उत्पन्न होती हैं.हिमालय में उत्पन्न होने वाली सभी वनस्पतियां वीर्य और शक्ति से संपन्न होती हैं.परन्तु कायाकल्प और सौंदर्य के लिए – **ऐन्द्री,ब्राह्मी,क्षीरकाकोली,शंखपुष्पी,मुंडी,महामुंडी,शतावरी,विदारीकंद,जीवंती,पुनर्नवा,नागबला,शालपर्णी, वचा, छत्रा,अतिछत्रा,मेदा,महामेदा, जीवक,ऋषभक,मुद्गपर्णी,माष पर्णी और मधुयष्टी** इनके ६ माह के प्रयोग से पूर्ण कायाकल्प होकर दीर्घयोश्य की प्राप्ति होती ही है. इसी प्रकार हमें ये भी नहीं भूलना चाहिए की पारद के प्रयोग से अतिशीघ्रता से जरा और दरिद्रता दोनों का ही नाश किया जा सकता है,क्यूंकि इसकी वेध क्षमता अनंत है. यदि इसे बद्ध कर उससे कल्प,कल्प पात्र,विग्रह या गुटिका का निर्माण कर प्रयोग किया जाये तो जो परिणाम प्राप्त होते हैं वे अद्भुत होते हैं.संसार में आज तक ऐसी कोई भी औषधि नहीं बन पायी है ,जो की मानव की मानसिक दुर्बलताओं व बौद्धिक क्षीणता को नष्ट कर दे तथा भविष्य में ना होने दे परन्तु,पारद में यह क्षमता है की यदि उसके अष्टविध संस्कार संपन्न कर दिए जाये तो उसके प्रयोग से ये संभव है-

"हतो हन्ति जराव्याधि मूर्छितो व्याधि घातकः

बद्ध खेचरताम् धत्ते कोन्य सूतात् कृपाकरः"

तभी तो रससिद्ध नागार्जुन ने यही उक्ति और ध्यान मन्त्र हमें पारद की शक्ति को जानने के लिए दिया है की **"रसे सिद्धे करिष्यामि निर्जरामिदं जगत"**

और सबसे महत्वपूर्ण पक्ष ये है की जब पारद के द्वारा तांत्रिक योग से कल्प माध्यम का निर्माण किया जाता है तो कुछ विशेष मंत्रो का एक विशेष क्रम से प्रयोग किया जाता है .और इस प्रकार निर्मित माध्यम तीव्र और अद्भुत प्रभावकारी होता है. यदि मात्र कल्प पात्र का ही निर्माण कर लिया जाये तो उसमे रखे जल का प्रयोग करने से धीरे धीरे कृशता और पलित दूर होकर पूर्ण यौवन की प्राप्ति होती है और देह का कालापन दूर होकर गौर वर्ण की प्राप्ति होती है

प्र० **आपने कहा है की अग्नि की सतत प्रदीप्ता ही कायाकल्प का मूल उद्देश्य है,तो इसके लिए आयुर्वेद में विभिन्न क्रियाएँ हैं परन्तु कायाकल्प तंत्र से इसका क्या सम्बन्ध हैं?**

उ० शरीर में उपस्थित सभी अग्नियों को नियंत्रित करने वाला स्थान नाभि है जहाँ पर मणिपुर चक्र होता है.हम सभी को ये पता है की रावण की नाभि में अमृत था,जिसके कारण उसकी मृत्यु नही हो सकती थी. परन्तु वो अमृत की प्राप्ति कैसे करता था,ये भी एक विचारणीय तथ्य है. रावण रचित **'लंकेश तंत्र पुष्पमाला'** में उसने इस क्रिया का पूर्ण विवरण दिया है.उसमे उसने बताया है की षोडश मातृकाओं और ५२ वर्णो का उद्गमस्थल मणिपूर ही है.इसी चक्र को उच्च कोटि के योगी **रत्न कूट चक्र** के नाम से भी जानते हैं.ये अग्नि तत्व से सम्बंधित चक्र है जिसका प्रतिक त्रिकोण होता है .इसी त्रिकोण में कल्पना शक्ति,विचार शक्ति और संकल्प शक्ति का वास होता है.

सम्पूर्ण तंत्र यही निवास करते हैं. उसने व्याख्या करते हुए बताया था की प्रत्येक मातृका की चार शक्तियां होती हैं जिन्हें की योगिनी कहा जाता है .इस प्रकार प्रत्येक मातृका चार योगिनियों की स्वामिनी होती है.और प्रत्येक योगिनी एक तंत्र की मूल शक्ति होती है,इस प्रकार १६ x ४=६४ योगिनियां ६४ तंत्रों को साकारता देती हुयी मणिपुर चक्र में स्थित होती हैं. और अग्नि की तीव्रता और मंदता से इनकी शक्ति पर भी अंतर पड़ता ही है.तांत्रिक कायाकल्प का अर्थ सामान्य कायाकल्प से कुछ अर्थों में भिन्न ही होता है. चिकित्सा शास्त्र के अनुसार जो कायाकल्प किया जाता है वो मंद गति से इन शक्तियों को प्राप्ति करवाता है.

उसमे शरीर का ही कायाकल्प किया जाता है परन्तु तांत्रिक क्रम से किया गया कायाकल्प दिव्य शक्तियों की प्राप्ति भी करवाता है,क्यूंकि वो शरीरस्थ अग्नि को मात्र प्रदीप्त या नियंत्रित ही नहीं करता है अपितु उस अग्नि में दिव्यता का योग कर उस अग्नि में विराजमान तांत्रिक दिव्य शक्तियों को भी साकार कर देता है. प्रत्येक मनुष्य में ब्रह्ममुहूर्त में(लगभग ३ बजे से सूर्योदय के पहले तक) सहस्त्रार दल से जीवन द्रव्य गिरता है (इसकी मात्रा व्यक्ति की दिनचर्या,चक्र का स्पंदन और भाव पर निर्भर करती है) और ये द्रव्य अन्तः शरीर में स्थित तीन महालिंगों को भेदता हुआ वीर्यपात के द्वारा शरीर से निकल जाता है.प्रकृति भी इस द्रव्य को शरीर में नहीं रहने देती है .वो स्वप्रदोष या तीव्र कामुक विचारों के माध्यम से कामोत्तेजना को तीव्र कर मनुष्य को इस द्रव्य मिश्रित वीर्य के साथ शरीर से बहार करने के लिए प्रेरित करती है.

उच्च कोटि के योगी तो अपनी जिव्हा को खेचरी मुद्रा में करके इस जीवन द्रव्य का पान कर लेते हैं और परिष्कृत वीर्य से इसका योग कर मणिपुर चक्र के माध्यम से इसे अग्नि रूप में परिवर्तित कर हमारे शरीर की अस्थियों में समाहित कर देते हैं.

जिसके कारण वो अग्नि तेजपुंज के रूप में हमारे शरीर के चतुर्दिक दृष्टिगोचर होती है जिसे की हम आभामंडल के नाम से जानते हैं.परन्तु ये सब सामान्य मनुष्य के लिए इतना सहज नहीं है.इसके लिए निरंतर सजग रहने की आवशयकता होती है जिससे की उस जीवन द्रव्य को हम व्यर्थ न जाने दे और उसे समेत कर सुरक्षित रख सके(क्यूंकि इस द्रव्य की प्राप्ति मात्र ब्रह्ममुहूर्त में ही होती है,

इसी कारण योगी और साधकों के लिए इस काल की उपयोगिता है) जिससे की हमें कोई बीमारी ना हो और ना ही कभी हमारा यौवन हमसे दूर हो पाए. और रावण इसी जीवन द्रव्य को निरंतर मणिपुर चक्र में संचयित करता रहा और इसमें स्ववीर्य को परिष्कृत कर योग करता रहा जिससे की वो निर्जरा और दिव्य जीवन जी सका.वैसे पृथक पृथक इन ६४ योगिनियों को सिद्ध करने की विधि **त्रोत्लोत्तर तंत्र** में वर्णित है जिसमे सहस्त्र यक्षिणियों को भी सिद्ध करने का सांगोपांग वर्णन है. इसी प्रकार **मतोत्तर तंत्र** में अन्तः और बाह्य रेतस् (जैसे मानव वीर्य और शिववीर्य) को परिष्कृत कर पूर्ण दिव्यता कैसे पायी जाये,इसका विषद वर्णन है.

प्र० **ये वीर्य को परिष्कृत करने की क्या आवशयकता है ,और इसका क्या अर्थ है ?**

उ० जैसा की मैंने ऊपर बताया है की मानव शरीर की सृष्टि बाले ही पञ्च तत्वों से होती है परन्तु मूल तत्व अग्नि और जल ही होते हैं.और मनुष्य शरीर में वीर्य अर्थात रेतस में यही दो तत्व प्रधान होते हैं.यही कारण है की वीर्य में मृदु ताप होता है.शुक्र बिंदु को गतिमान रहने के लिए इस ताप की आवशयकता होती है. यही वीर्य शरीर में शक्ति प्रदान करता है. तंत्र में कहा जाता है की “इस बिंदु का पतन होना मृत्यु है और इसको धारण कर लेना ही जीवन है.” परन्तु जल तत्व की अधिकता के कारण अग्नि शक्ति प्रभावकारी नहीं हो पाती और ये वीर्य मात्र शुक्र रुपी काम ऊर्जा में ही रह पाता है. वंश वृद्धि तक तो इसका ऐसा होना उचित है.

परन्तु तंत्र ये भली बहती समझाता है की यदि आपको अपना यौवन स्थिर रखना है तो इस काम ऊर्जा का संचय होना अति आवश्यक है.इसका अर्थ ये कदापि नहीं होता है की मानव सहवास या सम्भोग ना करे. वो करे परन्तु तांत्रिक भाव से ऐसा करे. तंत्र शुक्र की काम ऊर्जा का रूपांतरण करने को कहता है,अब चूँकि वीर्य में जल तत्व भी है और अग्नि तत्व भी.इसलिए उसकी दो गति संभव होती है. अधो गति और उर्ध्व गति.अब ये हमारे ऊपर निर्भर है की हम इस ऊर्जा को कौन सी गति देते हैं.अधो गति प्रदान करने पर जीवन और यौवन का क्षय होना अवश्यम्भावी है.परन्तु यदि इसे उर्ध्वगति दी जाये तो ये ऊर्जा त्रिकूट शक्ति से योग कर लेती है जिससे पूर्ण कायाकल्प होकर, यौवन,शक्ति और सौंदर्य की प्राप्ति होगी ही.

हमें इसके लिए वीर्य में मात्र जल तत्व का रूपांतरण कर अग्नि तत्व की प्रधानता करनी होगी. क्यूंकि अग्नि का गुण उर्ध्वगति करना होता है. गति तो होगी ही परन्तु वो बाह्य न होकर अन्तः होगी.और इस गति में वीर्य का मूल सत्व ओजस गति करता है.जिससे उपरोक्त जीवन द्रव्य का योग होते ही वो अमृत में परिवर्तित हो जाता है. जो आपको सदैव सदैव के लिए यौवन और सौंदर्य प्रदान कर देता है. इसी जल तत्व का रूपांतरण अग्नि तत्व में करना वीर्य को परिष्कृत करना कहलाता है.तांत्रिक कायाकल्प में यही तथ्य प्रधान होता है.

प्र० और कौन कौन सी विधियां है कायाकल्प तंत्र के अंतर्गत जो कायाकल्प और सौंदर्य प्रदान करती हो ?

उ० वैसे तो हजारों विधियाँ है जिनके द्वारा ऐसा किया जा सकता है.परन्तु कुछ ऐसे विधान है जिनके द्वारा सामान्य व्यक्ति भी अपने व्यक्तित्व,गुण,धन आदि का कायाकल्प कर प्रकृति से शक्ति का अर्जन कर सकता है.

लवण स्नान विधि- शरीरस्थ समस्त नकारात्मक ऊर्जा को बाहर करने के लिए

पञ्च तत्व साधन- इस विधि में पञ्च भूतों के मूल गुणों को प्राप्त किया जा सकता है.

श्री कल्प साधना- धन का श्री में परिवर्तन करने वाला प्रयोग

आयुर्तंत्र विधान- तंत्र और आयुर्वेद के समन्वय से सौंदर्य की प्राप्ति

दिव्य गुरुकल्प साधना-गुरु साधना द्वारा कायाकल्प करने की गोपनीय विधि

KAYA KALP & SOUNDARY RAHSY

With the blessed order of Sadgurudev when I met his ascetic disciple Pragyananda ji and I had seen the existing power of the kayakalpa from him (you hopefully have read about this science and mysteries of the same in the series articles of Swet Bindu and Rakta Bindu on the blog) accompanying him, I was fortunate enough to have answers of my queries about this science. From there after 2 months we reached to panchmarhi where he let me introduced with Saundarya Maa. Here,

I would especially like to mention a point that under the guidance of sadgurudev various material and ascetic disciples have received success in sadhanas related to various factors or in other words based on eligibility and research work sadgurudev had blessed those with specific sadhana secrets and he made ahead those disciples in the same factor & direction. This turned in Result of various benchmarks created by those disciples in the particular sadhana field.

Well, the residence of maa is in the deep forest behind bada mahadev cave where she is still active in search of various secrets of sadhana and to distribute among appropriate sadhak in her aashram. Its very difficult to find another person than saundaryaa maa who have the same efficiency of the knowledge given by sadgurudev about saundarya sadhana and apsara yakshini sadhana. Any I believe my fortune of the same time was written by diamond pen which resulted in the bliss from the swami pragyananda who hold knowledge of kayakalpa tantra and Saundaryaa maa – leading personality in saundarya sadhana.

And this was the right time to overcome my hunger for the knowledge in this field so this way I started shooting questions and with the same speed I was receiving my answers;

that day my belief went more stronger about the scientific statement that every action has reaction on the same speed!!! , isn't it?

Que : What does Kayakalp means ?

Ans: for that first of all it is essential to know the meaning of the term. The meaning of the Kaya is body but this also indicates important element fire (agni), this way it is also synonym of fire

"**jaatharah praninaam agnih kaay ityabhidhiyate"**

The digestive power (jatharaagni) of all beings are termed as kaya, this way only it has been said that if that fire remains all right, the human being will too have a proper health.

With this, one should also keep this line in the mind

"agni moolam balam pumsaam retaumilam cha jivanam, tatsmaat sarv prayatnena vahinam shukram cha rakshyeta"

Here, tantra yoga & ayurveda speaks about the same thing that the main source of the human energy is the fire and the basic of the life is virya, so, one should protect every type of fires and virya in the body. Agni also mean temperature of the human body which is known fact that if proper temperature vanishes or lost permanently from the body then human will be classified under death, which if get unbalanced human will be termed patient. So only lord Krishna said in the Gita

"aham vaishvaanaro bhutvaa praaninaam dehamaashritah
Praanah apaan samaayukto pachaamyanam chaturvadham"

Means I live in the bodies being vaishawanar (fire formed) and with praan apaan samaan airs I digest four types of foods which are eatable drinkable semi and chews.
And every being has four major states in their life, in any of the states if digestive fire (jatharaagni) and virya becomes dull or corrupt then they instantly move toward old but with the knowledge which leads body with a new growth and new youth is called kaya kalpa.

Que.: your statement leads to belief that source of life is only fire and virya, but the world is combination of five element which are earth,water, fire, eather and wind.
Ans.: son, you statement is right at your place but there is a secret which we should be aware of. And that is though the world is made of five elements but ether covers in, earth for base stability and wind works as helper. The main creation took place by water and fire and distortion too been cause when these becomes dull or corrupt. Virtually, kayakapa is agnikalpa because the distortion due to water could be repaired with operations, but in any healing method operation cannot repair damage caused by fire distortion, that is why kayakalp is also termed as fire healing (agni chikitsa).

Que.: what is the difference between kayakalpa and Saundarya?
Ans.: kayakalpa means transformation to its main and original form of any substance which has lost its original form and is under distortion due to the time factor or to transform it according to our wish.

The process has its many steps and with various mediums this process is completed. And with only kayakalpa the complete work is not possible but that substance, element, metal or the energy inside living being should have the positive impression in the outer world, the level or the amount of that particular energy is modulated in positive manner which should result in cause of the balanced stability in between inner and outer body. This process is called to attain beauty, in fact, kayakalpa and saundarya are incomplete without each other. And merge of the both could only be gain through tantra.

Que.: you said that to accomplish these processes there are many essential mediums, so which those special mediums are?

Ans.: for this task the selection take place of plants, mantras, metals, elements or living beings which have optimize amount of positive energies. With these mediums only, completeness of kayalapa and saundarya processes could be gain because in both of these processes negative ions are transferred to the positive ions or the positive ions are spread.

Que.: for kayakalpa process ayurveda system is famous, what does tantra contributes in the same?

Ans.: ayurveda is helper of proper healthy human life, from the dawn, human mind have always went ahead with heavy wish of being immortal. When this ayurved is joined with tantra then this lines could be turned to the accomplishment which yajurveda speaks to humans

"jivet sharadah shatam...bhuyashcha sharadah sataat"

Meaning we should be able to live 100 years after living 100 years healthy..! For this sort of living time it's essential to boost power of ayurveda and this is why tantra and ayurveda are merged. The meaning of the tantra is with particular specific process to give power in the process with the goal to achieve desired results.

And tantra removes all internal-external disorders and turns it in sophisticated benefits, may leads to attain beauty and with the same reason when kayakalpa and beauty meets than it is complete kayakalpa in real meaning. The tantra through which these amaizing processes are completed is called kayakalpa tantra and saundarya tantra because with external factors, tantric rituals and divine mantras are also taken in use of the process. With tantric rituals and combinations of mantra the process is boosted and the results get more stability.

Que.: Though ayurveda describe preparation methods for the kalp with various ingredients and herbs but which are those divine herbs and plants which makes human virile and may give human kayakalpa and saundarya when put into the use and what is the importance of the paarad in this part of the system?

Ans.: though various divine herbs are formed as kalp are applied for the consumption to overcome various distortions but for the complete kayakalpa the herbs which are taken into use are found in sufficient quantity in Himalayas. Himalayan herbs are full in power and virya. But for kayakalpa and saundarya-

Endrii, braahmii, kshirakaakoli, sankhapushpi, moondi, mahaamoondi, sataavari, vidaarikand, jivanti, punarnavaa,naagabalaa, shaalaparni, vachaa, chhatraa, atichhatraa, medaa, mahaamedaa, jivak, rhushabhak, mudgaparni, maashaparni and madhuyashti are if taken to use for 6 month can give a complete kayakalpa and long life.

This way we should never forget that with paarad prayoga, very quickly death and poverty could be vanish because the perforation capacity (Vedha Kshamataa) is infinite. If it is solidified and preparation of the kalpa,kalpa patra (vessels), idols or Gutika is prepared with ritual it gives amaizing results. There has no innovation in the world of medicine which can completely remove mental weakness and intellectual impairment and not let it cause in future but paarad have capacity of the same when proper samskaaras are completed on it then this makes its eligibility

"hato hanti jaraavyaadhi murchhito vyadhai ghaatakah
Baddh khecharataam dhatte konya sootaat krupaakarah"

Thus ras siddha nagarjuna said these lines and gave meditation mantra of paarad to know his power

"rase siddhe karishyami nirjaraamidam jagat"

And most important aspect is when the kalpa is prepared with paarad incorporating tantra in that condition there is a sequence of specific mantra are also chanted. And this way prepared medium is amazing beneficial. If only kalpa patra (vessel) is prepared then the use of the water placed in the vessel can slowly remove debility and can give a new youth and also dark skin of the body turns to fair one.

Que.: you just said that continuity of the flame of fire is the main objective of the kayakalpa, for this there are lot many processes in ayurveda but what is relation of the kaayakalpa tantra with this?

Ans.: the main controller of every fire of the body is navel where Manipur chakra is situated. We all know that raavan was having nectar in his navel, with which his death was impossible. But how he used to get nectar that is even considerable fact? "Lankesh Tantra Pushpamaalaa" written by raavan describes the complete process. In that scripture he described that Manipur chakra is cradle of 16 matrukas and 52 varnas. The same chakra is also known as ratnakoot chakra among yogis.

This chakra is related with fire the symbol of the same is triangle. This place is of imagination power, thought power, and resolution power. All tantras stay here. He described it that every matruka have four shaktis which are termed as Yogini. This way every matruka is controller of four yoginis. And every yogini is main power of one tantra, this way 16 X 4 =64 yogini's are stays in the nevel holding a power of tantra. And with flame's power of fire may cause effect on the power of this yogini.

The meaning of tantric kayakapa is different from the normal kayakalpa. The kaya kalpa done through healing system slowly provides these powers. It cause kayakalpa of body only but kayakalpa done with tantric process provides divine accomplishments, because that not only controls the flame of fire but also incorporates divineness and forms the divine tantric powers.

In the bramhamuhurta (from nearly 3'o clock till the sunrise) everyhuman being will have a life liquid (jivan dravya) fall from sahastrara chakra (the quantity depends on daily routine of person, vibration in chakra and feelings) and this liquid floats among the way of three mahaling and ooze out from the body through semen fall (viryapaat). Nature too not let this liquid stay in the body.

It also inspire human mind to make this liquid, mixed in virya, out of body by increasing sexual energy and thinking, resulting in wet-dreams (swapndosha) or sexual desires. The yogis of the higher states have this liquid at time of its fall from sahastrara by forming khechari mudra through tongue and spread it in the body by mixing it in protected virya placing it in Manipur chakra and converting it in fire form.

Because of this the fire light could also be visualise around us which is also known as aura (aabhaamandala). But for simple human being it is not so simple. Continuity of the practice is essential that the wastage of the life liquid could be stop and that liquid could be collected and securely placed in the body.

(because this liquid could be gain in bramha muhurt only, for yogis and sadhakas time factor is important) through which we do not have any diseases and neither our youthfulness go far from us. And raavana used to collect this life liquid in Manipur chakra with which he used to incorporate virya and through this process he attended such state of immortality and divine life. Anyways, there is a process to accomplish these power yoginis separate one by one in trotlottara tantra in which there is also a description to accomplish thousand yakshinis. This way in mattotar tantra there is a description of processes to attain complete divineness by sophisticating inner and outer retash(like maanav virya and shiva virya)

Que.: why it is essential to sophisticating this virya, what does that mean?

Ans.: as I said, though human body is made of five elements but main elements are water and fire. And in human body the basic element in virya or retas are these two only. It is also a result of tempreture felt in virya. Sukrabindu (virya) needs this temperature for the continuity of movement. This virya gives power to the body. In tantra it is said that "finishing this bindu results in the death and adopting it is life".

But because of high amount of water element the fire power is not so effective and this virya only stays in the form of sukra in sexual power. Till propagating it should remain like that.But tantra understands better that if you want to stay with your youth, you must collect your sexual power.

This does never mean that one should not involve them self in sexual intercourse. It should be but with tantric feel. Tantra ask to convert sexual power of sukra, because of two elements water and fire in the virya, it have its two movements. Downfall (adhogati) and upward (urdhwgati). Now it depends on us to give direction to the energy. Downfall will definitely result in loss of youth and life. But if the direction is given for upward then this energy will merge with trikut power through which youth, power and beauty could be gain with complete kayakalpa.

For this we just need to convert water element to fire and increase of the fire element. Because the property of fire is to go upwards. The movement will be there but inner and not outer and in this movement the main base of the virya, Ojas will move. This way, it will merge with the life liquid and will turn to the nector which will give you youth and beauty forever. This transformation of water element to fire element is called sophistication of virya. In tantric kayakalpa this is the basic fact.

Que.: which are other processes under kayakalpa tantra which gives kayakalpa and beauty?

Ans.: there are thousands of processes with which this task could be accomplished. But there are some specific processes by which simple human being can even do kayakalpa of their personality, efficacy and can have power from the nature.

Lavan snaan vidhi – to remove all the negative energy from the body.

Panch tatv sadhana – in this process basic properties of five elements could be gain

Shri kalp sadhana – to convert dhan to shri

Ayuratantra vidhana – to have beauty through tantra and ayurveda adjoined

Divya gurukalpa sadhana – secret method to do kayakalpa through guru sadhana.

LAVAN SNAN SE SOUNDARY PRAPTI

विश्वास भी नहीं होता हैं , हैं न , एक बार करके तो देखें....

अक्सर ऐसा होता है हम कब नकारात्मकता से घिर जाते हैं,हमें पता ही नहीं चलता,तब चाहे हमारे आस पास कितने भी सुख के संसाधन हो,वे हमें खुशी नहीं दे पाते.एक अंजना सा भय और संकोच हमरे मन में ही भर जाता है.अजीब सी चिडचिडाहट मान लो हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा ही बन जाती है. हमारे व्यक्तित्व का प्रभाव लोगो पर पड़ना ही बंद हो जाता है. स्वयं के निर्णयों पर स्वयं को ही शंका होने लगती है.अनजान सी उदासी मान लो हमारा व्यक्तित्व ही बन जाती है,मन में लगातार नकारात्मक विचार आते रहते हैं. कायाकल्प तंत्र के एक छोटे से प्रयोग को आप सप्ताह के मात्र एक दिन अपनी दिनचर्या में अपनाकर उपरोक्त सभी परेशानियों और बाधाओं से मुक्ति पा सकते हैं.और इस प्रयोग की वजह से आप स्वयं अपने व्यवहार में आया सकारात्मक परिवर्तन और मित्रों की बढती संख्या को देखकर ताज्जुब में पड जायेंगे.

आप कोई भी एक दिन इसके लिए चयनित कर सकते हैं.अपने स्नान के जल में (मान लो १६ लीटर जल है)में डेढ़ चम्मच (टी स्पून) नमक मिला ले. पहले उस जल को २१ बार "वं" बीज मन्त्र से अभिमंत्रित कर लें. और पहले सामान्य जल से अपने चेहरे आँखों,और सर को धो ले.इसके बाद उस नमक मिश्रित जल से कंधे से लेकर पैरों को स्नान करवा ले. फिर पुनः स्वच्छ जल से स्नान कर लें.इसके बाद स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूजन कक्ष में सदगुरुदेव के चित्र के समक्ष बैठ कर निम्न मंत्र की १ माला कर ले. इस विधान को आप प्रति सप्ताह दोहरा सकते हैं या जब भी आप में नकारात्मकता का वास होने लगे तब कर लीजिए. निश्चय ही एक अद्भुत ऊर्जा का समावेश आपमें होने लगेगा.इसी मंत्र का दीर्घ और विस्तृत विधान तांत्रिक कायाकल्प प्रक्रिया में किया जाता है.पर वो यहाँ हमारा अभीष्ट नहीं है.

मंत्र-**ॐऐं रोगः न शेषः कायाकल्पाय ऐंग ॐ**

मंत्र-**OM AING ROGAH NA SHESHAH KAAYAAKALPAAY AING OM.**

LAVAN SNAN SE SOUNDARY PRAPTI

Usually it happens when and where we filled up with negativity, we also don't get realize it. Though at that time we have enormous materialistic resources which give us happiness but they doesn't work. They are enabling to give us happiness. A strange fear and hesitant is always there in back of our mind. A strange irritating behavior becomes a permanent part of our nature. Isn't it?

So that in actual sense influence of our personality get down. We only suspect out our own decision. A strange dullness becomes our personality. In short we are always bogged up with negative waves. Well Well Well lemme tell you one thing-that you can easily get rid out from such negativity by following procedure of Kayakalp Tantra and after doing it you can notice a great difference. By this experiment you only can see yourself filled with positive vibes and increasing count of friends in your life. And I must tell you that will be sheer astonishing and enthusiastic for you.

You can choose any day as per you convenient. Mix the one and half teaspoon salt in the water which you take for taking shower (say 16 ltr water u require for bath). Then do consecrations process 21 times with "Vam" beej mantra. Then first wash your face, eyes and head hairs by normal water. Then by that salted water wash yourself from shoulders to legs. Then again wash with normal water. Then wipe off completely with clean dry cloth. After wearing fresh clean clothes directly go to puja kaksh and sit in front of sadgurudev and chant 1 rosary of following mantra. You can repeat this process for two times in a week or whenever you feel like negativity is out of control then repeat the same. Definitely you will fill with wonderful positive energy. The same procedure in detailed manner is mention in Tantrik Kayakalp but that's not our intention here.

Mantra - **OM AING ROGAH NA SHESHAH KAAYAAKALPAAY AING OM**

PANCH-TATV SADHANA PRAYOG

एक दुर्लभ गोपनीय साधना केवल आपके लिए ही

सृष्टि का आधार है पञ्च तत्व जिनसे इसका निर्माण हुआ,और इन्ही तत्वों से मनुष्य भी निर्मित हुआ है.परन्तु जो भी विकृति हमारे देह में होती है या जीवन में होती है,उसका कारण क्या हमने जानने की कोशिश की है नहीं न.... हमें तो मात्र यही लगता है की लो बीमार हो गए तो अब चलो डाक्टर के पास,लेकिन ये कोई समाधान नहीं है.क्यूंकि वो उस तत्व की पूर्ती नहीं कर सकता है. यदि चेहरे पर धूमिलता छाई हो, आकर्षण क्षमता की कमी हो गयी हो, मोटापा या दुबलापन आ गया हो,ऑफिस में परिस्थितियां अनुकूल नहीं रह रही हो,पति या प्रेमी,प्रेमिका या पत्नी से सम्बन्ध ठीक नहीं रह पा रहे हो तो इसका सीधा अर्थ होता है की अग्नि तत्व न्यून हो गया है.

क्यूंकि समस्त आकर्षण का आधार है अग्नि तत्व.यदि घर में धन नहीं रुक रहा हो,काम बिगड रहे हो,खून पतला हो गया हो.स्वप्न दोष हो रहा हो,गर्भ नहीं ठहर रहा हो.वीर्य पतला हो गया हो,या शुक्राणुओं की संख्या कम हो गयी हो तो ,ये सभी विकृतियाँ जल तत्व से सम्बंधित होती हैं.इस प्रकार जीवन की सभी स्थिति के लिए इन तत्वों की विकृति ही उत्तरदायी है.यहाँ पर मैं इन दो तत्वों की ही जानकारी दे रहा हूँ,क्यूंकि ये एक वृहद विज्ञानं है जिसकी परते यहाँ उधेडना उचित नहीं है.

आपको क्या लगता है की इन तत्वों में विकृति क्यूँ होती है? क्या ये कोई शारीरिक दोष है? नहीं ऐसा बिलकुल नहीं है बल्कि हमारे सामान्य जीवन के कर्म और हमारा संचित कर्म इसके लिए उत्तरदायी है. जैसे यदि व्यक्ति व्यर्थ में जल का नाश करता हो या अपव्यय करता हो तो उसे जल से सम्बंधित विकृतियों का सामना करना ही पड़ेगा.इसी प्रकार जो व्यक्ति प्राणी मात्र को भोजन नहीं करवा सकता,ऊर्जा का अपव्यय करता रहता है ,हमेशा क्रोध मुद्रा में रहता हो ,उसे अग्नि तत्व की विकृति के दुष्परिणाम भुगतने ही पड़ते हैं. क्यूंकि हमारे शरीर में सर्वाधिक ऊर्जा आँख,कान और हमरे जननांगों से ही निसृत होती है.

इसलिए ध्यान का अभ्यास किया जाता है. और ध्यान की अवस्था में आँखे अर्धोन्मीलित रहती है,श्रवण शक्ति को शुन्य कर दिया जाता है ताकि ऊर्जा का अपव्यय ना हो,यहाँ मैं कोई कपोल कल्पना पर बात नहीं कर रहा हूँ.आप स्वतः ही निम्न साधना को करके देखिये.परिणाम आपके समक्ष ही होगा. हमें प्रकृति ने सभी तत्वों की निर्धारित मात्रा प्रदान की है,और वो भी संतुलन बनाये रखने के लिए ,अब जब हम उसका अपव्यय करेंगे तो वो बह्यागत ही अपव्यय नहीं होते हैं अपितु आंतरिक रूप से भी उनमे विकृति आना स्वाभाविक है.क्यूंकि हमारे जिन कर्मों से बाह्य जगत प्रभावित होता है उसका उतना ही प्रभाव हमारे आंतरिक जगत पर भी पड़ता है. जब भी आप उपरोक्त स्थितियों का सामना कर रहे हों तो एक बार जरुर चिंतन कीजियेगा की कब हमने अग्नि या जल का अपव्यय किया है बर्बादी की है. आपको खुद समझ में आ जायेगा की गलती कहाँ हुयी हैं.

और जो भी इन स्थितियों को अनुकूल करना चाहे वो.निम्न प्रयोगों को करके देख ले.पर इसका ये अर्थ भी नहीं है की परिस्थिति अनुकूल होते ही फिर हमने तत्वों का अपव्यय प्रारंभ कर दिया.क्यूंकि एक बात हमेशा याद रखिये, भूल की माफ़ी संभव है.अपराध की नहीं.नीचे मैं मात्र अग्नि और जल तत्व को संतुलित करने का विधान बता रहा हूँ. कायाकल्प तंत्र का ये बहुत महत्वपूर्ण भाग हैं.इन्हें नकारना बुद्धिमत्ता तो कदापि नहीं कहा जा सकता.

अग्नि तत्व के संतुलन को बनाये रखने के लिए प्रातःकाल स्वच्छ वस्त्र धारण कर तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित कर ,उस दीपक को इतनी ऊँचाई पर स्थापित कर ले की आपकी नजर उसकी लौ पर सीधी पड़े. अब उस लौ को स्थिर आसन और चित्त से देखते हुए निम्न मंत्र का जप करे ,ये क्रम नित्य २४ मिनट तक होना चाहिए और ११ दिनों का यह क्रम है.एक बात ध्यान रखियेगा की जब भी नेत्रों में जलन होने लग जाये तब आँखे बंद कर ले और जप के पश्चात अंको को गुलाब जल मिश्रित शीतल जल से अवश्य ही धो ले. ये प्रयोग दिखने और पढ़ने में आसान है परन्तु इसका प्रभाव अचूक है,ये हम सभी पर सदगुरुदेव की असीम कृपा है जो ऐसा ज्ञान हम सभी के सामने आया है.

मंत्र -**ॐरं पूर्ण तुष्ट्ये त्वं प्रतिकात्मकम पूर्ण आरोग्य सौभाग्य देहि दापय में नमः**

यदि जल तत्व से सम्बंधित विकृतियों के कारण समस्याओं का सामना करना पद रहा है.तो ऐसे शंख में जिसमे २५० मिली लीटर जल आ जाता हो को लेकर प्रातः काल उपरोक्त अनुसार ही स्नानादि कर के स्वच्छ वस्त्र धारण कर.सामने बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछाकर उस पर शंख स्थापित कर दे.कैसा भी शंख हो सकता है.और उस शंख को जल से भर दे और प्रतिदिन ३० मिनट तक नित्य १४ दिनों तक निम्न मंत्र को करे.जप के बाद उस जल को या तो उसी दिन बहते हुए साफ़ जल में प्रवाहित करदे या साधना समाप्त होने के ७ दिनों के भीतर.जप काल में उस शंख पर ही ध्यान केंद्रित करना ही. जप काल में दीपक प्रज्वलित नहीं करना है. जीवन की शारीरिक और भौतिक समस्याओं का समाधान आपके सामने होगा.

मंत्र- ॐवारिः वारिः परिमार्जय वज्र रूपेण पूर्ण स्थायित्व प्रदातुव्यम वरुणाय नमः

Panch TaTva Sadhan Prayog-

Five elements are the base of any creativity. And from this only human is created. But whatever defects happened in our body or in life, have we ever went to find out the reason behind it? I guess answer is 'NO'… We always felt that if we are ill then we must see the doctor. But this is not the solution. Because he can't fill up the gap of lack of that element. If our face goes dull, lack of attractiveness, fatness or over slim, office environment is against us, unsatisfactory relationship with companion then all this directly relates to lack of fire element. Because base of every type of attraction- fire element.

If unstable wealth, work failure, thinness in blood, nightfall, misconception, thin sperms, sperm count less, all these are related to water element. So for such type of defects in life only water element is responsible. Here I am giving only information related to these two elements only. As this is very broad science whose layers should be not open here. What do think as whats the reason behind such defectiveness in such elements? Are they any physical faults? No this is not at all like that… Rather our day today carry outs and work savings are responsible for it. Like individual waste water or misuses it then he will get defects related to water element.

Likewise anyone who even can't feed any one, wastes energy, always stays in angry mudra, so they suffers with fire element diseases. As form our body eyes, nose, ears and all genital organs releases energy. Therefore meditation is being practiced out. In such state eyes are half closed half opened. Hearing capacity becomes zero so that energy is not wasted. Here I am not talking just fake. You only experience the below sadhna and result will be infront of you. Nature has delegated required amount of all elements and that to be for balancing, now.

And when expend it in outer form,its not just affect us in outer rather in inner way also.

However as our outer world is influenced so as inner world too in same quantity.

Whenever you face similar situation in your life the please rethink the above lines that when we wasted water or fire element recently. Automatically you will come to know your fault. And whosoever wants to rectify this situation can attempt this process. But it doesn't mean that whenever condition gets normal we again start such bad behavior. Because fault can be forgive but crime cannot. Below I am giving you the balancing of fire and water element. Its very significant chapter of rejuvenation. Rejecting it will not be a wise decision.

To maintain the balance in fire element light the sesame oil lamp with fresh clean cloths. Place it exactly at such position so as your eyesight will clash direct in straight line. With still mind and eyesight chant the following mantra. It should be done continuously for 24 mins. And consecutively 11 days. Plz mind whenever you feel like irritation in eyes just close it.And after completeing the mantra jap wash the eyes with rose water. This experiment seems light while reading but its results are faultless. All this is great blessings of sadgurudevji upon us as such divine knowledge is in our lap.

Mantra _ Om ram purna tushtye tvam pratikatmakam purna aarogya saubhagya dehi daapay me namah.

If one is facing complications related to water element defects then, take shankh which can contail 250 ml water in it. Take it in morning similarly above stated after taking shower place white cloth on small table and place that shankh on it. Shankh can be of any type. And fill it with water. And every day for 30 mins, 14 consecutive days chant the below mantra. After jap throw that water into any flowing water within 7 days of sadhna.. In the process just concentrate on that shankh only. Don't flame lamp while this experiment. Life's physical and materialstic problem's solution will be infront of you..

Mantra – Om vaari vaari parimarjaya vajra rupen purna sthaitva pradaatuvyam varunay namah.

SHRI KALP SADHANA

इस अद्भुत साधना का नाम ही आपको बता रहा हैं

जीवन के चारों पुरुषार्थ में धन की अपनी महत्ता है. प्रज्ञानंद जी बताया था की लक्ष्मी के विविध रूप हैं और प्रत्येक रूप की अपनी महत्ता है ,परन्तु ये सभी रूप जीवन में आनंद का संचार तब तक नहीं कर सकते जब तक की आपकी लक्ष्मी का रूपांतरण श्री में ना कर दिया जाये.क्या आपने कभी सोचा है की,हम एक संपत्ति खरीदते हैं और उसका उपभोग करने के पहले ही हम या तो बीमार हो जाते हैं या हमारे स्वजनों पर आपदा आन पड़ती है.घर में प्रचुर धन आता है परन्तु उसके साथ ही विभिन्न रोगों और तकलीफों का भी आगमन हो जाता है. धन के साथ साथ परिवार की खुशियों पर आफतें क्यूँ टूट पड़ती है और कुछ नहीं तो खुद उपर्जनकर्ता ही व्यसन का शिकार हो जाता है. इसी कारण तंत्र में लक्ष्मी का भी कायाकल्प कर श्री में परिवतन करने का विधान है.फिर तो जो भी सही रास्ते से कमाया हुआ हमारा धन होता है वो आनंद और सुखों की निष्कंटक प्राप्ति करवाता है.इसलिए इस विधान को प्रत्येक ३ माह में एक बार अवश्य ही करना चाहिए.

इसके लिए शुक्ल पक्ष की पंचमी को प्रातः स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण करके पूजन स्थल पर पूर्वाभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठ जाये.सामने पारद श्री यन्त्र स्थापित हो और पूर्ण भव्यता के साथ सदगुरुदेव का चित्र भी. इन दोनों का पूर्ण विधान से पंचोपचार पूजन करे.खीर का भोग चढ़ाये.तत्पश्चात त्रिगंध से श्रीयंत्र पर तिलक लगाये.१ मंत्र बोले १ बार तिलक लगाये फिर दूसरा मंत्र उच्चारित करते हुए दूसरा तिलक लगाये. इस प्रकार ८ बिंदी लगाये.

ॐद्विभुजा लक्ष्म्ये नमः

ॐगजलक्ष्म्ये नमः

ॐमहालक्ष्म्ये नमः

ॐश्री देव्यै नमः

ॐवीरलक्ष्म्ये नमः

ॐद्विभुजा वीरलक्ष्म्ये नमः

ॐअष्टभुजा वीरलक्ष्म्ये नमः

ॐप्रसन्नलक्ष्म्ये नमः

तत्पश्चात १ अक्षत अर्पित करते हुए एक बार मंत्र का उच्चारण करे और इसी क्रम से १००८ बार अक्षत समर्पित करे.

मंत्र- **ॐयं वं रं ऐश्वर्य सिद्धिम् ॐनमः**

मंत्र जप के पश्चात उस अक्षत को २४ घंटो के बाद एकत्र कर पक्षियों को खिला दे और खीर का प्रसाद अपने स्व संबंधियों के साथ ग्रहण करें.आप स्वयं ही इस साधना को करे और नित्य नवीन आर्थिक ऊचाइयों को स्पर्श करे वो भी पूर्ण निश्चिन्तता के साथ.

SHRI KALP SADHANA

In life's 4 Purusharth money keeps different importance.. Pragyanand jee told us that there are various forms of goddess Lakshmi and each form keeps a different importance in it. But all these cannot give you happiness till the time you don't convert your Lakshmi form into Shree form. Have you ever thought, we buy any property and before start using it either we get ill or our relatives faces obstacle. Abundant money inflow comes in house but along with that it brings illness and problems abundantly. Or along with wealth either family faces great problem else the wealth earner get victim of bad habits. For that reason only in Kayakalp Tantra there is procedure called conversion of Lakshmi into Shree. Then whatever white money we earn remain ours only and it gives unlimited happiness in life. Therefore this experiment must be done in every 3 months

For this sadhna in Shukla Paksh, on any Panchmi take shower, wear white clean cloths and sit one white asana facing towards east direction. Establish Parad Shree Yantra and Sadgurudev's image also. Now worship both of them with panchopchar pujan completely. Then offer kheer (made up of sugar, milk and wheat flake) as sweets. Thereafter tilak the shree Yantra with trigandh. With every tilak chant a mantra then with second tilak second time mantra, consecutively do eight bindis.

Om dvibhuja lakshmyai Namah
Om gajalakshmyai namah
Om maha lakshmyai namah
Om shree devyaee namah
Om veer lakshmyai namah
om dvibhuja veer lakshmyai namah
om ashtbhuja veer lakshmyai namah
om prasann lakshmyai namah

Thereafter present 1 akshat along with chant the following mantra, do the same for 1008 times and sacrifice akshat also.
Mantra - **Om yam vam ram aishvarya sidhhim om namah**

After 24 hour of completion of Mantra Jap collect all akshats and feed it to birds and eat Kheer sweet along with ur relatives....Well i must say you alone perform this sadhna and touch the new hieghts of success with complete satisfaction.

DIVYA GURU KALP SADHANA
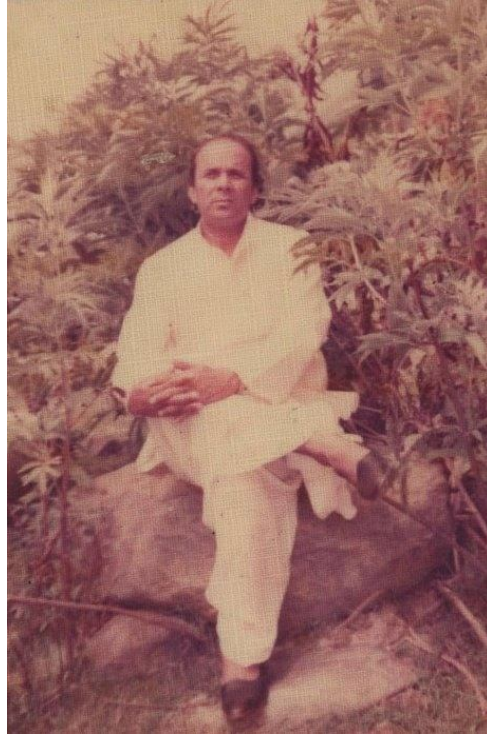
एक अत्यंत दुर्लभ साधना विधान केवल आपके लिए ही

सदगुरुदेव ने इस साधना के रहस्यों की विवेचना करते हुए कहा था की "यदि साधक अपने जीवन में पूर्णत्व प्राप्त करना चाहता है तो उसे इस साधना को अपने जीवन में संपन्न करना ही होगा.ये साधना सिद्धाश्रम के महायोगियों के मध्य प्रचलित है.

जब भी किसी साधक को सद्गुरु अपने निर्देशन में उस परमपावन भूमि पर स्थायित्व देना चाहते हैं तो ,उसके पहले वो साधक के शरीर को जरा और व्याधि से मुक्त करने की क्रिया करते हैं,साधक के शरीर को दिव्य बना देते हैं जिसके फलस्वरूप वो सभी आपदाओं से ना सिर्फ बचा रहता है बल्कि पूर्ण निर्मलता के साथ यौवन को अपने में समेटे हुए निरंतर साधनात्मक ऊचाइयों की और अग्रसर रहता है." जहा अन्य साधनाओं में बाह्य उपादान की भी आवशयकता होती है,वही इस साधना में जो निर्धारित क्रम है यदि साधक मात्र उसी को मर्यादित रूप से संपन्न कर ले तो.वो खुद अभूतपूर्व आश्चर्य में डूब जाता है. सभी प्रकार के रोगों से तो वो मुक्त होता ही है,साथ ही साथ पूर्ण कुण्डलिनी चक्रों के जागरण के साथ उसका कायाकल्प होता हुआ सिद्धाश्रम जाने का भी उसका मार्ग प्रशस्त हो जाता है.ये साधना पढ़ने मात्र के लिए नहीं अपितु प्रयोग करके देखने हेतु यहाँ दी गयी है.

इस साधना को किसी भी रविवार से प्रारंभ किया जा सकता है. ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान आदि संपन्न कर श्वेत वस्त्र धारण कर ले और साधना कक्ष में श्वेत आसन पर बैठ जाये.सामने बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछा दे और उस पर सदगुरुदेव का चित्र स्थापित कर दे. चित्र के सामने निम्न यंत्र बनाकर उस पर अक्षत की एक बड़ी ढेरी बना ले और उस पर घृत का दीपक स्थापित कर दे. शुद्धिकरण के पश्चात गुरु ध्यान करे –

५	५	५
५	५	५
५	५	५

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरूवै नमः

फिर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गुरु चित्र को गंगा जल से स्नान करवाएं –

ॐनिं निखिलेश्वराय स्नानं समर्पयामी

फिर उन्हें साफ़ वस्त्र से पोछ कर उन्हें आसन रूप में पुष्प समर्पित करे.

ॐनिं निखिलेश्वराय पुष्पं समर्पयामी

फिर सुगन्धित धूप जलाये.

ॐनिं निखिलेश्वराय धूपं आघ्रापयामि

तत्पश्चात गुरुचित्र के सामने ढेरी पर स्थापित गौघृत का दीप प्रज्वातिल करें .

ॐनिं निखिलेश्वराय दीपम् दर्शयामी

आखिर में खीर का नैवेद्य श्री सदगुरुदेव के चरणों में अर्पित करे.

ॐनिं निखिलेश्वराय नैवेद्यं निवेद्यामी

प्रयोग के लिए पूर्ण सिद्धासन या पद्मासन में बैठकर १२० माला १ दिन में अथवा २१-२१ माला ७ दिनों तक संपन्न करे. ये मंत्र जप स्फटिक माला से होना चाहिए और ये माला पहले कही प्रयोग न की हुयी हो. परन्तु यदि इसे अनुष्ठान रूप में संपन्न करना हो तो सवा लाख मंत्र जप होना चाहिए और मूल दीपक के बायीं और तिल के तेल का दीपक अखंड होना चाहिए. **दृष्टि** दीपक की लौ पर होनी चाहिए,बीच बीच में आप पलके झपका सकते हैं.मन्त्र के मध्य में ऐसा लगता है जैसे की आपकी रीढ़ की हड्डी में तीव्र जलन हो रही है.और ये दहकता लंबे समय तक होती है.आपकी नाभि और मूलाधार में स्पंदन प्रारंभ हो जाता है. और ये सब साधना काल में ही होता है.स्वप्न में आपको विचित्र से दृश्य दिखाई पड़ने लगते हैं,किसी गुफा,किसी वन,हिमालय आदि के दृश्य आपको दिखाई देते हैं.अष्टगंध की भीनी खुशबु आपके चंहु और आपको सुवासित करने लगती है. स्वतः ही ध्यान लगने लगता है और चेहरे के चारों और आभामंडल तीव्र होते जाता है.और पूर्ण अनुष्ठान के बाद तो जो प्राप्ति होती है उसे यहाँ नहीं लिखा जा सकता,वो तो स्वयं अनुभूत करने वाली उपलब्धि है.

मंत्र- **ॐऐं ह्रीं श्रीं कुल कुण्डलिनी जाग्रय स्फोटय श्रीं ह्रीं ऐं फट्.**

OM AING HREENG SHREENG KUL KUNDALINI JAAGRAY SFOTAY SHREENG HREENG AING PHAT

Divya Guru Kalp Sadhna

Sadgurudev told us while discernment of sadhna secrets “If sadhak wants to have completeness in life then he must do this sadhna…This sadhna is very much famous among Sidhhashram Mahayogis. Whenever Sadguru is intended to keep any sadhak under instruction at this ultimate holy place, so they first make his/her body free from the old age and diseases.

Actually they convert his normal body into divine body in resultant sadhak not only becomes more efficient to tackle all the issues but also maintain his youth with purity and step forward continuously towards sadhnatmak heights." Where in other sadhnas so many external equipment are also required, but in this sadhna if sadhak finish all the given guidelines as in mentioned way, he himself will fall in great surprise. Its not only vanishes the diseases but also activates the each chakra of Kundalini along with rejuvenation and ultimately opens the path towards Siddhashram. Well I want to say something here i.e. this sadhna is not just for sake of reading but to do it practically also… (Share d experiences too)

You can start this sadhna on any Sunday. In Brahma muhurt (4 to 6 am) one should take shower and wear white clean cloths, should sit on a white asana. Then place a white cloth on small table for worship and establish Sadgurudev's Picture on it. In front of it draw a following yantra and make a small heap of akshat (rice) and light a clarified butter (ghee) lamp. After purification proceed Guru dhyan --

५	५	५
५	५	५
५	५	५
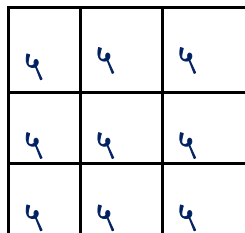
Agyan timirandhasya gyananjan shalakaya

Chakshurunmilitam yen tasmai shri guruvai namah

Then chant the above mantra and slowing spinkle Ganga water on picture and

Om nim nikhileshvaraya snanam samarpayami

Then wipe it with clean cloth and offer fresh flowers on it.

Om nim nikhileshvaraya pushpam samarpayami

Then flame a fragrance aroma resin.

Om nim nikhileshvaraya dhupam aaghrapyami

Then after burn the lamp place on the heap

Om nim nikhileshvaraya deepam darshyami

At last offers Kheer (made up of milk, sugar and wheat flakes) sweet and sacrifice onto the holy feets of Sadgurudev.

Om nim nikhileshvaraya naivedyam nivedyami

For this one must sit in Padmasan or Siddhasan and should complete 120 roasaries in one day or 21-21 roasaries in 7 consecutive days. This mantra jap should be done only by crystal beads roasary. Importantly it should be fresh not to be used before. But if any one wants it to be done in Anushthan form (inception) then 125000 jap must have to complete in one go. And near original lamp, the sesame oil lamp should also be flame for whole the time till it's get over. Your eye sight should be on the flame of lamp in between you can blink your eyes. While chanting you will feel damn irritation in spinal backbone and it will last long. Vibrations will start at ur navel point and Muladhar chakra. This will happen only during sadhna time.

You will see strange dreams like, any caves, jungle, Himalaya etc scenes. You will feel a mesmerasing aroma (Ashtagandh) everywere around. Meditation would happen by your own and facial glow would increase day by day. And after completion what you will get can putforth in words..All that only you can experience it.

OM AING HREENG SHREENG KUL KUNDALINI JAAGRAY SFOTAY SHREENG HREENG AING PHAT

आयुर्वेद पर आधारित दुर्लभ साधना विधान

यूँ तो आयुर्वेद में सौंदर्य प्रदाता विविध प्रयोग पाए जाते हैं.जिनके प्रयोग से निश्चित ही पूर्ण सुंदरता की प्राप्ति होगी.परन्तु वे प्रयोग यदि निम्न मन्त्र के साथ प्रयोग किये जाये जो अद्भुत और तीव्र प्रभाव प्रदान करते हैं. आयुर्वेद में भी बिना अभिमंत्रित किये वनस्पति का सेवन नहीं किया जाता है,परन्तु कतिपय आलस के कारण लोगो ने इस प्रभाग का प्रयोग करना ही बंद कर दिया जिसके फलस्वरूप जो प्रभाव होना चाहिए ,वो नहीं मिल पता है.आप खुद ही एक काम करियेगा ,नीचे जो प्रयोग दिए गए हैं उन्हें किसी को बगैर मंत्र के प्रयोग करवाकर देखिये और दुसरे को मन्त्र के साथ.प्रभाव आपको खुद ही आश्चर्यचकित कर देगा. जब भी आपको सौंदर्य से सम्बंधित कोई प्रयोग करना हो,उस सामग्री या वनस्पति को आप निम्न मंत्र से ३२४ बार अभिमंत्रित कर दे फिर प्रयोग करे.ये वज्रयान साधना का मंत्र है जो स्वतः ही सिद्ध है,इसे पृथक रूप से सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है.

ॐ क्लीं अनंग रत्यै पूर्ण सम्मोहन सौंदर्य सिद्धिम क्लीं नमः

1. जिनके मुख से दुर्गंध आती हो या दांत हिल रहे हो यदि वो नित्य पिसते को खूब चबाकर खाए तो मुख की दुगंध हमेशा हमेशा के लिए दूर हो जाती है और हिलते दांत भी स्थिर हो जाते है.

2. जिसे अपनी देह की कृशता यानि दुबलापन मिटाना हो तो पिश्ते के साथ शक्कर का सेवन २ मॉस तक करे,दुबलापन दूर हो जाता है.

3. लोग अक्सर गरम पानी के साथ शहद लेते हैं मोटापा दूर करने के लिए,यदि उपरोक्त मंत्र के साथ मात्र १ माह ही प्रयोग करके देखे, लाभ देखकर आप खुद आश्चर्यचकित हो जायेंगे.

4. ठीक इसी प्रकार तुलसी की ११ पत्तियों को यदि छाछ के साथ १ माह सेवन किया जाये तो भी व्यर्थ की चर्बी सरलता से गलकर बाहर हो जाती है.

5. यदि व्यक्ति अपना वजन कम करना चाहता हो तो नीम के फूलों को पीसकर और कपडे से छानकर शहद और पानी के साथ सेवन करे,निश्चय ही वजन कम हो जायेगा.

6. हरसिंगार या पारिजात के पुष्पों का लेप चेहरे पर करने से चेहरे पर निखार आता है और निश्चय ही गोरापन बढ़ता है.

7. यदि तुलसी की पत्तियों को शहद के साथ लिया जाये तो पथरी होने की कोई सम्भावना नहीं रहती.

8. नीम्बू का रस या गुडहल की पत्ती पीसकर सर पर उस स्थान पर लेप करे जहाँ बाल झड गए हो,ये क्रिया २ मॉस तक करने पर पुनः बाल आने लगते हैं और काले हो जाते हैं.

9. जिन लोगों को भी भोजन के तुरंत बाद मल त्याग करने की आदत होती है,यदि वो कचनार की कली का सेवन करे तो ये बीमारी दूर हो जाती है.

10. यदि मधुमेह की बीमारी हो तो मेथी के पत्तों का रस पीने से ये बीमारी दूर हो जाती है.

11. पुनर्नवा चूर्ण का नित्य २ ग्राम सेवन करने से कायाकल्प होता ही है और सौंदर्य की वृद्धि होती ही है.

12. यदि १ बूँद घृत को लगाकर धतूरे की पत्ती को तवे पर गरम कर स्त्री या लड़की अपने स्तन पर रख कर कस कर बाँध ले और रात भर रहने दे,दोनों तरफ १-१ पत्ती का ही प्रयोग करना है.निश्चय ही ७ दिन में पूर्ण उभार की प्राप्ति होती ही है,बड़ी बड़ी दवाइयां जो कार्य नही कर पाती,वो कार्य ये सामान्य सा दिखने वाला प्रयोग पूरा कर देता है और नारी के सौंदर्य को उभार देता है.

13. खीरे के रस में शहद मिलाकर पूरे शरीर और चेहरे पर लेप कर १५ मिनट रखे और बाद में कुनकुने पानी से स्नान कर ले,सारी झुर्रियाँ धीरे धीरे दूर हो जाती हैं.

AyurtAntrA SadhAna

Despite of the fact that in Ayurved studies, there are many ways and means by which any one can gain the complete beauty, but if those processes are done with the below mentioned chants (Mantras),these Ayurvedic processes can give unimaginable and fast results…

In Ayurvedic also, no herbal plants can be intake, but due to the laziness of the people they have stopped using these processes due to which they are not getting the desired results….

You yourself do one thing that implies all the below processes one without the chants and the second time with these chants, the results will be unbelievable for you all…

If you want to go for any of the process related with the beauty then enchant that thing or the herb with the below chant 324 times and conduct the process…This is known as **"Vajra Yaan Sadhna Mantra"** which is self proven and it does not need any proof individually….

"Om Kleem Anang Ratye Poorn Sammohan Saundrya Siddhim Kleem Namah"

ॐ क्लीं अनंग रत्यै पूर्ण सम्मोहन सौंदर्य सिद्धिम क्लीं नमः

1. The persons who are having problem of foul smell of mouth or the teeth's are not strong should practice the chewing of Pista on daily basis, both the problems will get resolved…
2. Similarly, who wants to get overcome with the underweight problem one should intake Pista with the sugar for two months on regular basis; they will feel that their underweight problem is being resolved…
3. People often take honey with the warm water to remove the obesity but if the same process gets connected with the above mantra for one month, you will be surprised by seeing the results….
4. Similarly, if the process is done with the intake 11 leaves of basil (Tulsi) with the butter milk (Chhanch) for one month, the unwanted fat from the body will be dissolved easily…

5. If any person wants to loose the weight, the intake of grinded Neem flowers and by filtering it with honey and water will definitely give the desired results…

6. The face pack of Harsingar or Paarijaat flowers helps in increasing the fairness and the glow of the face…

7. If anyone takes the Basil leaves (Tulsi) with the honey, there is no possibility for the Stone problem…

8. The paste of Lime and China rose (Gudhal) leaves if applied on the area where there is hair problem fall for the 2 months, the hair fall problem gets resolved and the new hair will be black ones…

9. The people who are having problem of excretion just after the meal, if they make habit of eating the Kachnar flower bud (kali), they will get rid of this problem…

10. If anyone is having Diabetes problem, the fenugreek leaves (Methi) juice is the best remedy for the cure of this disease…

11. The regular intake of 2 Gms. "Punarnava Choorn" helps in complete makeover and adds the glow in the beauty…

12. If any lady or girl ties the Dhatura(Harebell) leaf (after making it warm) on her breast(only 1 leaf on each breast) for the overnight,undoubtedly,the rise in the breast will be natural which is difficult by the use of various medicines and will add beauty in the lady figure with just this small process…

13. Apply face pack of Cucumber with honey on face for 15 minutes and then wash it off with the luke warm water at the time of bath, slowly and gradually, the wrinkles will get away…

SHRI MARITYUNJAY TANTROKT KALP VIDHAN
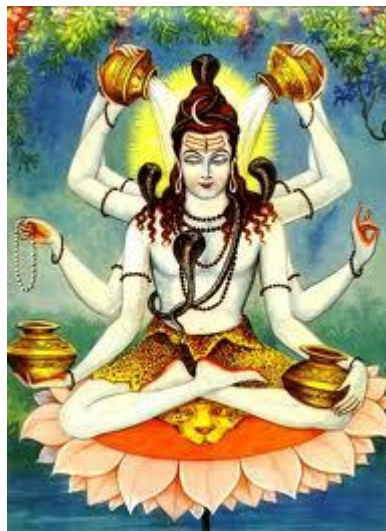
क्या कभी नाम सुना हैं आपने , इस परम गोपनीय विधान का ...

त्रिफला,त्रिकूट,ब्राह्मी,गिलोय,लाल चित्रक,नाग केसर,सोंठ,भांगरा,संभालू की जड़ , हल्दी, दारुहल्दी, भांग,चित्रक,दाल चीनी,छोटी इलायची,गंभीरी चाल,वायविडंग,वच- प्रत्येक ८०-८० ग्राम,आसाम का गुड़ २ किलो,इन सबको घोट कर ३६० वटी बनाये ,जब आप खरल कर रहे हो तो "**ॐ जूं सः**" मंत्र का जप करते रहे.शुभ मुहूर्त में भगवान सदगुरुदेव और धनवंतरी का पूजन संपन्न करे,पूजन करते समय ये सभी वटी आपके सामने होनी चाहिए.फिर प्रतिदिन खाने के बाद रात्री में १ वटी का सेवन करें.इसके सेवन के बाद शीतल जल का सेवन करें. नमक और कड़वे पदार्थों का कम से कम सेवन करें.

ये जठर अग्नि को प्रदीप्त करता है.शरीर में ओज की वृद्धि करता है.सफ़ेद बाल पुनः काले हो जाते हैं.दृष्टि तीव्र होती ही है.बुढ़ापा दूर होकर पुनः यौवन की प्राप्ति होती है.रोग और जरा दूर हो जाते हैं.व्यक्ति सूर्या के सामान तेजस्वी हो जाता है,अनंग और रति के सामने रूपवान,लंबी आयु वाला और मधुभाषी हो जाता है.शरीर से कमल पुष्प के सामान गंध निसृत होती हैं.नाख़ून,बाल आदि पुनः आने लगते हैं.काम ऊर्जा की वृद्धि होती है.

Shree Mrityunjoy TanTrokT Kalp

Take **Trifala,Trikut,Brahmi,Giloy,Lal Chitrak,Naag Kesar,Saunth,Bhangra,Sambhalu Root, Turmeric(Haldi),Daruhaldi,Bhaang,Chitrak,Daal Chini(Cinnamon),Small Cardamom(Chhoti Ilayachi),Gambhiri Chaal,Vyavindg,Vach each of these ingredients 80 gms.with 2 Kgs.of Assam Jaggery (**Gud) and make 360 vati of all the things…Do, remember one thing that when you are mixing and grinding all these things – enchant the mantra **"Om Joom Sah"** and in the Shubh Mahurat (Auspicious time),conduct the poojan of Sadgurudev and the Lord Dhanvantri and during the Poojan,these all vati should be in front of you….

Now, take one vati in night after the meal on daily basis and after this, take some cold WATER….Avoid the salty and bitter feeding stuff….

This helps in curing the Gastric and appetite problems and helps in enhancing energy in the body, the grey hairs becomes black again, the eyesight becomes strong, the feeling of youth ness comes again and the diseases gets cured…

The individual becomes energetic like the Sun and becomes beautiful and smart just as the famous love couple (Anang and Rati) with long life…Also, becomes soft spoken and the fragrance like lotus flower comes within the body and helps in gaining more energy…

SOUBHGY PRAD STROT

गुरु बहिनों के लिए एक अद्भुत स्त्रोत ...सौभाग्य की वर्षा के लिए ..

यदि निम्न प्रार्थना मन्त्र को स्त्रीवर्ग नित्य प्रति की साधना में मात्र ५ बार सम्मिलित कर ले तो अद्भुत सम्मोहन क्षमता उनके व्यक्तित्व में व्याप्त हो जाती है.और सौभाग्य की प्राप्ति होती है. सभी कार्यों में सफलता मिलने लगती है.

हरिस्त्वामाराध्यम प्रणतजनसौभाग्यजननीं
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत् ।
स्मर:अपी त्वां नत्वा रति नयन लेहयोन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महतां ॥

SOUBHAGYA PRAD STOTRA

If the woman involves the below Mantra in her daily devotion only for the 5 times, her personality will become totally fascinating and hypnotic and will be blessed and becomes successful in each work….

HARISTVAMARADHYAM PRANATJANSOUBHAGYJANANIM

PURA NARI BHUTVA PURARIPUMPI KSHOBHMANYAT |

SAMARAHAPI TVAAM NATVA RATI NAYAN LEHYON VAPUSHA

MUNINAMPYANTAH PRABHTI HI MOHAY MAHTAM ||

Soot Rahsyam PaRt-6 Sadgurudev aur Surya vigyan

सदगुरुदेव और सूर्य विज्ञानं -प्रकृति के अज्ञात रहस्य

क्या कभी आपने सोचा है की क्यों एक गृहस्थ को देव पूजा मे सर्वप्रथम सूर्यपूजा करना क्यों अनिवार्य कहा जाता है? सृष्टि का आधार सूर्य है. सूर्य ही जीवन को ऊर्जा,तेजस्विता, और जीव-शक्ति का प्रवाह देता है...सोचिये की जब बरसात या शीतऋतु मे २-४ दिन सूर्य की रश्मिया बादलों की वजह से हम तक नहीं पहोच पाती तो कैसे हमारे चारों और दुर्गन्ध व् अवसाद का वातावरण सृजित हो जाता है, जो हमें भगवान भास्कर की उपयोगिता का भास् करा ही देता है. ये आयाम तो ठीक वैसे ही है जो की हमें दिखाई देते हैं, वस्तुतः बहुत कुछ ऐसा है जो हमारी बुद्धि से तब तक परे है जब तक ही हम सद्गुरु चरणों मे बैठ कर उन रहस्यों को जान नहीं लेते या आत्मसात नहीं कर लेते, सूर्य ही जीवन को उत्पन्न करता है और जीवन को परिवर्धित भी.यह बात लोगो के समर्थन के पक्ष मे ना हो लेकिन यही नितांत सत्य है. सिद्धाश्रम के योगियो ने इस प्रक्रिया का प्रत्यक्षीकरण भी किया और समाज को इस सत्य से अवगत भी करवाया है.

सदगुरुदेव ने इस रहस्य को समझाते हुए कहा था की “सभी वस्तुओ मे प्रकृति और पुरुष अंश विद्यमान होता है, जिस वस्तु मे प्रकृति (स्त्री) अंश अधिक और पुरुष भाग अल्प है, उसमे प्रकृति भाव ही प्रधान रूप मे दिखता है, तथा पुरुष भाव गुप्त दबा रहता है ठीक इसी प्रकार पुरुष अंश प्रधान रहने पर पुरुष भाव ही द्रष्टिगोचर रहता है. सम्पूर्ण सृष्टि पदार्थ मात्र इन्ही दो प्रतिकूल शक्तियों के संग्रह से ही उत्पन्न हुए है और ये नियम सर्वत्र विद्यमान है”

सूर्यविज्ञानं की परिभाषा बताते हुए उन्होंने कहा था की “ सूर्य प्रकाश ७ किरणों मे होता है, इन्ही के विभिन्न संयोग और वियोग के फलस्वरूप विभिन्न पदार्थो का निर्माण होता है. किरण वस्तुतः इसकी अभिव्यक्ति करती है इस लिए सूर्य किरणों और उनके वर्णो को विभिन्न वर्णो की किरणों का परस्पर संयोग तथा वियोग इनका ज्ञान ही सूर्य विज्ञानं का रहस्य है .इसके माध्यम से सृजन , संहार, अविर्भाव और तिरोभाव सब कुछ संभव है , तथा इसी के द्वारा रूपांतरण भी होता है.” अथर्ववेद के ४३ ऋचाओं मे विस्तार से इन किरणों का प्रयोग बताया गया है.

भले ही विज्ञानं अभी तक ११३ अणु को खोज चूका है पर सूर्य की ७ किरणों मे से प्रत्येक के पास २१-२१ किरण है. यदि एक विशेष लेंस के द्वारा विशेष कोण से सूर्य की किरण का वेधन किया जाये तो रूपांतरण या सृजन होता है. इसी विज्ञानं को स्वर्ण विज्ञानं भी कहा जाता है. सदगुरुदेव ने कई शिविरों मे और कई अवसरों पर इसका प्रत्यक्ष दिग्दर्शन कराया है और साथ ही साथ उन्होंने सूर्य-सिद्धांत पर एक शिविर भी लगाकर शिष्यों को यह ज्ञान प्रदान किया था और सबसे बड़ी बात है की उन्होंने सूर्य को आत्म एकाकार करने की मंत्रात्मक प्रक्रिया भी बताई है, जिसके द्वारा साधक उन रश्मियों को समझ कर उसका प्रयोग कर सकते है. साथ ही साथ सदगुरुदेव ने इसके लिए अलग अलग अवसरों पर कई मंत्र व प्रयोग बताये है. वस्तुतः यह हमारे जीवन का सौभाग्य ही है की ऐसे दुर्लभ ज्ञान को सदगुरुदेव से प्राप्त कर इस ज्ञान परंपरा के द्वारा अपने जीवन को समृद्ध बनाये.

Soot Rahsyam PaRt-6 Sadgurudev aur Surya Vigyan

Have you ever thought that why a Married person is asked to worship of the Lord Sun (Surya Poojan) in the beginning of any of the Dev Poojan????Because the base of the nature is – SUN…The Sun gives the Energy, Glow & the Life Power flow to the each organism on the planet…Just think, when there is a rainy season or in winters when the Sun Rays are not able to reach at the earth for 2 – 4 days, we feel very dizzy and depressed and the surroundings of us fills with the foul smell and the whole environment becomes very lifeless….which gives a feeling of to know the importance of the Lord Sun in each respect…

This explanation is somewhat like we understand what we see but there are certain many more things which we will not be able unless & until we do not follow the path shown by the Sadgurudev and will not be able to unfold any of the secrets and to acquire them…because Sun only gives rise to the Life and fulfil the same…Might be you people will be disagree by my point but this is as true as life…The divine saints not only showed this process but they make the society aware about the truth also…

Sadgurudev has explained the secret of the "Surya Vigyan" in the way – each organism in the universe are acquainted with the two parts – Prakriti (which is a feminine part) and the Purush (which is a male part)….The thing which is more accomplished with the Prakriti & less with the Purush is more equivalent with the basic nature of the Prakriti (means the feminine feelings will be the basic nature)of that organism will be observed more and the Purush characteristics will be hidden & vice versa – the organism which is having Purush characteristics more the feelings will be accordingly like the males one…The whole universe is based on these two opposite powers and the life has emerged by the struggles of these two powers only and this TRUTH lies in the whole part of the Universe since ancient time….

Sadgurudev had defined about the Surya Vigyan – The Sun Rays are divided into the 7 parts – The combination & the depart of these sunrays in different processes give rise to the different matters in the Universe…Actually, the Sunrays are the representatives and because of which the knowledge & science of the identifying the Sun Rays and their (Varna - Colour) and the combination & the depart of these rays and the colour is only the secret of the Surya Vigyan…

With the help of this – Creation, Destruction, Appearance (Avirbhav) & the Illusion (Tirobhav) everything is possible and with this transformation can also takes place…The holy 43 verses (Shlok) of the Atharv Ved explains the processes of the Surya Vigyan in a detailed manner…No matter that the Science has discovered the 113 atoms but the 7 sunrays of the Sun consists 21 atoms in each ray. With the help of a special lens with a particular angle the penetration of a sunray can take place through which a transformation or a creation can take place…

Surya Vigyan is also known as the Swarna Vigyan…The Sadgurudev has shown it very clearly during their different campaigning's and simultaneously he had organised a special camp for the Surya Siddhant (The basic principles of SUN Science) and has explored the knowledge to his students…The best part of the camp was that he explained the process of "Mantratmak Prakriya" of the combining of the Sun rays together…The devotee can conduct the process after the understanding the process of the Sun Rays nature and work and for this the Sadgurudev conducted various camps and has told about the different Mantras (Chants)…

Basically this is our Good Luck that we learn and spread this type of divine and amazing knowledge and convocation given by the Sadgurudev and make our lives happy and prosperous…The process conducted by the Sadgurudev can be seen on the below mentioned link….

This is only for your knowledge…The whole process & the Principle can be learned with the request to the Sadgurudev and the whole Processes and the devotion is possible just by the blessings of the Sadgurudev,,,

SWARN RAHSYAM -6 BEAUTY THROUGH KALP-PATRA

कल्प पात्र द्वारा सौन्दर्य प्राप्ति

संपूर्ण श्रृष्टि में सभी रोगों का नाश मात्र पारद के द्वारा ही संभव है ,और ये भी जगद्विख्यात है की यदि मनुष्य अपने शरीर का कायाकल्प कर सकता है तो मात्र पारद के प्रयोग द्वारा ही ये संभव है .

पारद के द्वारा कई विभिन्न तरीकों से कायाकल्प किया जाता है ,जैसे पारद के द्वारा कल्प का निर्माण किया जा सकता है जिससे शरीर को आरोग्यता तो दी ही जाती है साथ ही साथ सौंदर्य के मापदंड पर खरा उतरने के लिए जब कई अनिवार्य शर्ते होती हैं

उनमे भी इन कल्पो के द्वारा पूर्ण लाभ पाया जाता है जिस प्रकार दबे हुए या काली रंगत को गौरान्गना के द्वारा मात्र कुछ ही दिनों में गोरा रंग स्थाई रूप से दिया जा सकता है. उचा कद और सुगठित शरीर की प्राप्ति संदीपन कल्प के द्वारा की जा सकती है.

इन सभी कल्पों में पारद का और पारद जल का प्रयोग किया जाता है .जिसका विधान इतना सहज भी नहीं है, हाँ ये एक अलग बात है की सदगुरुदेव ने कई अवसरों पर अपने शिष्यों को इन कल्पों का विधान भी समझाया और इन कल्पों को बनाकर दिया भी .

ऐसे ही पारद के द्वारा कुछ विशेष वनस्पतियों के सहयोग से सीसे ,रंगे ,जस्ते से रहित कर और यौवन कर्त्री संस्कार सिद्ध कर एक विशेष पात्र का निर्माण किया जाता है जिसे ऐंग-पत्र या कायाकल्प पत्र कहा जाता है . इस पात्र का निर्माण पूर्ण रूपेण महा सरस्वती बीज मन्त्र ऐंग का विखंडन कर और कायाकल्प मंत्र से संपुटित कर किया जाता है .संपूर्ण श्रृष्टि में सरस्वती हैं जो व्यक्ति को रस युक्त कर सकती हैं या पूर्ण सौंदर्य दे सकती हैं. इस पात्र के द्वारा सौंदर्य के विभिन्न पक्षों को प्राप्त किया जा सकता है .

पारद को पूर्ण संस्कृत और वनस्पति की उर्जा का सहयोग कर रस को रसराज बनाया जाता है तभी इस पत्र का निर्माण सहज हो पता है . ये कटोरे के आकार का होता है . चाहे बालों से सम्बंधित विकार हो या कामशक्ति का प्रस्फोटन मतलब पूर्ण यौवन की प्राप्ति ,चाहे गर्भ से सम्बंधित विकार हो या फिर नए शरीर की प्राप्ति (वैसे ही जैसे सर्प जाती अपनी केंचुली को छोड़कर नयी देह को प्राप्त कर लेती है) .हमारे प्राचीनतम ज्ञान पाकर हमें गर्व होना चाहिए जहाँ असंभव कुछ भी नहीं है क्यूंकि असीम प्रज्ञा शक्ति का प्रयोग करने के बाद इन सूत्रों का उदय हुआ है. मैं इनमे से कुछ प्रयोग यहाँ पर दे रहा हूँ आशा करता हूँ की आपको इससे पूर्ण लाभ होगा.

सफ़ेद बालो को स्थाई रूप से काला करने का कल्प प्रयोग -

ताजे आंवले 2 किलो लेकर एक मिटटी की हांड़ी में दाल दे .और उसमे 3 किलो पानी दाल दे / हांड़ी इतनी बड़ी होनी चाहिए जिसमे लगभग 5 किलो सामग्री आ जाये , इसके बाद प्रत्येक सामग्री 250-250 ग्राम दाल दे , छुआरे ,वंश लोचन ,जरापीपर , कपूर काचरी , अध् लाई और अध्लंगा की गिरी .

प्रत्येक वस्तु सुद्ध और साफ़ हो इन सबको आंवले के साथ मिला कर रख दे और धाक दे 24 घंटो तक इस पर सूर्या की रौशनी नहीं पड़नी चाहिए .

दुसरे दिन हांड़ी में और पानी दाल दे यानि मुह तक भर दे और उसे धीमी -2 आंच पर पकाए ,3 घंटे तक पकाने के बाद उसे नीचे उतार कर ठंडा कर लें और ठंडा कर उन साड़ी सामग्री को एक रस कर लें . नित्य इसमें से पांच तोला सामग्री को कल्प पत्र में 12 घंटो के लिए रख दें और नित्य ऐसे ही 5-5 तोले का सेवन करें इस पात्र के प्रभाव से इस कल्प में एक विशेष शक्ति आजाती है जिसके सेवन से बालों का रंग स्थयी रूप से काला हो जाता है और बाल घने व लम्बे भी हो जाते हैं .

पूर्ण यौवन प्राप्ति के लिए तथा काम शक्ति की वृद्धि के लिए नित्य रात्रि में गुनगुना दूध 50 ग्राम इस पात्र में रख दे और निम्न मन्त्र का 5 मिनिट तक जप करे बाद में उस दूध को पी लें कुछ ही दिनों में आप स्वयं ही इसके प्रभाव को देख कर आश्चर्य चकित रह जायेंगे .जिस पारद से इस पात्र का निर्माण होता है वो यौवन कर्त्री संस्कार स्संपन्न और ये पात्र अनंग मन्त्रों से सिद्ध होता है . ये विधि देखने में तो तो बहुत ही आसन दिखाई देती है पर है बहुत ही प्रभावकारी .

मंत्र :

ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाये मनोभिलाषित स्तभंनम कुरु कुरु स्वाहा

इस मंत्र का प्रयोग मूंगा और शुकर दन्त पर भी किया जाता है पर वो विधि बहुत ही दीर्घ है .

संतान प्राप्ति तथा गर्भ से सम्बंधित विकार के शमन के लिए -इस पत्र में गाय के दूध को 50 ग्राम भर दे और उसमे एंग बीज के प्रतिक कुषा (दाब), पलाश और अकरकरा वनस्पतियों का अर्क मिला दे (इन तीनो वनस्पति के द्वारा ही सृष्टि की प्रक्रिया होती है).फिर इस मिश्रण को चलाते हुए एंग मंत्र का 3 घंटे तक जप करे और 3 घंटे के बाद उस दूध को दुसरे दूध में मिला कर पिला दें या यदि स्वयं के लिए कर रहे हैं तो स्वयं पी ले .ये 100% प्रमाणिक प्रयोग है .

संपूर्ण कायाकल्प प्रयोग आदि का वर्णन फिर कभी करने का प्रयास करूँगा . इस पात्र के द्वारा बहुत से कार्यों को संपन्न किया जा सकता है .जरुरत आलोचना की नहीं बल्कि कसौटी पर परखने की है .

एक प्रयोग :

त्रिधारा हरजोड़ी को जो पक़ कर पीले रंग की हो जाती हैं .इसे यदि , पिघले हुए हिरण खुरी रांगे में डाल दिया जाये तो वह तत्क्षण विशुद्ध रजत में बदल जाता हैं

KAYAKALP PATRA

In the whole universe, any incurable disease can be cured by the only divine metal PARAD / Mercury and it is very much famous saying in the world that a human complete makeover is also possible only through this metal

There are many different methods by which makeover is possible with the help of PARAD.for eg.with the help of a Parad KALPcan be prepared which is used in curing of any sort of disease and at the same time it worked in giving a body glowing and fair skin by accomplishing all the necessary conditions which is required for a beautiful and healthy skinThis is just similar like a fair colour can be obtained forever by using Gourrangna in just a few days and a good body posture and body fragrance can be obtained by Sandeepan Kalp

In all the above mentioned KALP-Use of Parad & Parad water is done and the process of this is not so easy yes this is something different that Sadgurudev at many fronts have explained the importance and use of these KALP and has also prepared the same for the students

Similarly, a special Patra can be prepared by Parad & some particular Botanical herbs and by purifying all the Lead, Zinc & colours and by treating it with Yauvan Kartri Samskaar which is known as Aing Patra or Kayakalp Patra This Patra / object can be created by enchanting the combination of Poorn Saraswati Beej Mantra Aing ka Vikhandan & Kayakalp Mantra

In the whole Universe, only Goddess Saraswati ji is the one who can accomplish a person both with the body & the soulWith the help of this Patra, different aspects of beauty can be gained. When Parad is fully accomplished and is treated with the botanical herbs it results into the RASRAJ from the RAS and after this only, the creation of this Patra is possible This Patra looks somewhat like a BowlNo matter what is the desire whether it is related to Hair problem, complete youthfulness, any gynaecology disorders or a desire of getting a new skin (just like a snake changes his skin and gains a new one) can be gained by this PatraWe should feel proud on our ancient knowledgeable books where nothing is impossible because where these values have came into the existence after a very long and deep determination and practiceHere I am giving few processes and hope you all will find these useful for your life

Conversion of Grey Hairs to Black Hairs :-

Take 2 Kgs.of Amla in an earthen clay pot and pour 3 Litres of water in it. The pot should be big enough to carry 5 Kgs.of ingredients. Now put each ingredients 250 gms..each in quantity Chhuaare, Vanshlochan, Jarapeepar, Kapurkaachri, Adhlayee & Adhlanga ki giri.But, remember each ingredient should be clean and pure. Mix all the above with Amla in pot and cover the same and keep in a shed (where sunrays cannot reach the pot) for 24 hours

Second day, pour some water into the pot till the upper level and cook the pot on a light flame for 3 hours. After this, allow it to cool and mix all the ingredients well and make a uniform mixture. Now start keeping 5 Tolas (1 Tola = 10 Gms..) of this mixture for 12 hours in the Patra on daily basis and by the intake of this quantity and due to the effect of this Patra this Kalp becomes so much powerful that by the using of this the colour of hairs will remain black forever and will be long and silky

For gaining of complete Youthfulness & well powered :-

On daily basis take 50 gms.of Luke warm milk and keep it in a Patra and chant the following Mantra for 5 minutes

Om **Namo Bhagwate Mahabal Parakramaye Manobhilashit Stambhanam Kuru Swaha** (This mantra is used on both Moonga & Shukradant, but that process is very much long and deep)

After this if this milk is taken you yourself will feel the amazing effectsThe milk which is kept in the Patra the Patra is fully accomplished with the Yauvan Kartri Samskaar & Anang MantraThis process looks very simple but is very much effective

For the curing of foetus & the fulfilment of child desire :-

Keep 50 gms.of Cow milk in the Patra and mix the representative of Aing Beej (Kusha Green Grass), Palash (Flower) & Akarkara Vanaspati juice and make a mixture of itThe creation of nature is by these 3 botanical herbsStir this mixture by enchanting AING MANTRA for 3 hours and mix this milk into the other milk and give it to the desired person or if this process is for yourself take the sameThis is 100 % sure experiment

So,friends,this is all for today, I will try to give details about the complete makeover also later onMany more processes can be accomplished by this PatraThe only need is not to criticize the same but to Validate it .

Prayog:

If one add in fully molten "Hiran khuri raange", the tridhara harjodi ,which turned to yellow in color (due to fully ripe), than that molten raanga will instantly converted into silver.

अद्भुत सरल धन दायक लक्ष्मी प्रयोग

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

अब इसे एक बार तो करके देखिये

साधना जगत मे लक्ष्मी प्राप्ति के कई ऐसे अनूठे प्रयोग है जो दिखने मे अत्यधिक सामान्य प्रतीत होते है लेकिन उनका प्रभाव अत्यधिक लाभप्रद होता है. कई व्यक्ति अत्यधिक व्यस्तता होने के कारण साधनाओ को परिपूर्ण नही कर सकते है और उनका लाभ नही उठा सकते है, लेकिन विधानों के साथ साथ कई एसी प्रक्रियाए भी है जो की निरंतर करने पर साधक लाभ उठा सकते है. लक्ष्मी से सबंधित ऐसा ही एक प्रयोग दिया जा रहा है. रविवार की शाम साधक धतूरे की जड़ को निकाले. जड़ को निकालते वक़्त "ॐ वं सर्व वनस्पति साफल्यम वनदुर्गे नमः" का ९ बार जाप करे. जड़ को पूजा स्थान मे स्थापित कर दे.

इसके बाद उस जड़ के सामने एक सिक्का रखे जिसे देवी का स्वरुप मानते हुए उसके सामने १०८ बार क्रीम श्रीं क्रीम का जाप करे अरे वो सिक्का अपनी जेब मे संभल के रखदे. अगले दिन उस सिक्के को वही जड़ के सामने रख कर १०८ बार क्रीम श्रिम क्रीम मंत्र का जाप करे. और सिक्के को संभल कर अपनी जेब मे रखले. रोज जाप करने से पहले जड़ को लोहबान धुप जरुर दे. इस प्रकार १ महीना जाप करते रहना है. इसमे सिक्का बदलना नही है, एक ही सिक्के पर यह पूरी प्रक्रिया होनी चाहिए. जेसे जेसे दिन दिन बढ़ते जाएँगे आर्थिक लाभ होता जाएगा. एक महीने भर यह प्रक्रिया करने पर साधक को अर्थ की प्राप्ति के नए नए स्त्रोत मिलते जाते है और धन सबंधी समश्यो का समाधान होता है.

MOST EFFECTIVE AND EASY LAKSHMI PRAYOG

In the sadhana world, there are lots of such prayog exists which seems very short and normal but the effect o the same is very lucrative. So many people holing short of time could not accomplish sadhanas and becomes unable to have benefit of the same. But with sadhana, there are some special processes which if sadhak does on the regular basis can have a big benefit. One of such prayog related to lakshmi is this way.

On Sunday evening, take the root of Dhatoora plant. While taking the root out one should chant " Aum Vam Vanaspati Saafalyam Vanadurge Namah" 9 times. Place that root in your worship place. After that place a coin near the root and worshiping the root as goddess in mind, chant 108 time " Kreem shreem Kreem" in front of it; then take the coin and place it carefully in your pocket. Next day the same coin should be again placed in front of the root and chant the mantra 108 times "Kreem Shreem Kreem" after that place the coin in your pocket. One should offer lohbaan Dhoop before mantra chanting to the root. Repeat the process for 1 whole month. The coin should not be changed, on the single same coin the whole process should be done.

The days will pass, benefits will start increasing. When the process will be completed, sadhak will have new door of income coming to him and problems realted to income will get a solution.

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

यह छोटे छोटे सरल प्रयोग आपके जीवन में एक नयी आशा का संचार कर सकते हैं यदि इन्हें पूर्ण विस्वास के साथ किया जाये जो की आपके लिए सफलता के रास्ते खोल सकते हैं .

1. यदि नीबू को सात बार सिर पर से घुमाकर जो नज़र दोष से पीड़ित व्यक्ति हैं उतारा किया जाये फिर इन नीबू को दो भागो में काट करके , किसी भी चौराहे पर फ़ेंक दे. नज़र दोष दूर होगा.
2. यदि कुआरी कन्याओ को खाना खिलाया जाये तो मंगल दोष से मुक्ति मिलती हैं
3. घर में जितने सदस्य हो उतने नारियल किसी भी नदी में प्रवाहित करने से पति पत्नी को रोगों यदि कोई हैं तो उसमें आराम मिलता हैं .
4. कभी भी शाम के समय झाड़ू न लगाये ठीक इसी तरह कभी भी रात के खाने के बाद घर में झूठे बर्तन रखे, ऐसा करना आपके घर के धन धान्य के लिए बहुत अच्छा होगा,
5. किसी भी परीक्षा में जाते समय घर के बड़े व्यक्तियों के चरण स्पर्श करें ओर साथ ही अपने पूजा घर में एक घी का दीपक लगाये.

6. घर से बाहर जाते समय ११ बार " ॐ नमः शिवाय " मंत्र का जप आपको दिन भर दुर्घटनाओ से बचाता हैं .
7. यदि आप पर यदि आपके पितरों की कृपा दृष्टी हो जाये साथ ही साथ कुल देवी / देवता की भी कृपा वरस उठे तो आप के जीवनमें आने वाली शारीरिक ,मानसिक आर्थिक समस्याओं से आपको छुटकारा मिलता हैं ही .
8. यदिप्रतिदिन पूजा काल में आप १२ नाम लक्ष्मी का उच्चारण करते हैं तब कुछ दिनके अन्दर ही आप लक्ष्मी की कृपा से अभिभूत होंगे ही,
9. जब भी आप घर से बाहर जाये तीन इलायची के दाने हाँथ में ले कर " "का उच्च्नारण करे, आपके धन संबंधित समस्या का आपको समाधान मिलेगा ही,
10. यदि तुलसी के पोधे घर के में दरवाजे के दोनों ओर लगाये तो धन सम्बंधित समस्याओं में सफलता मिलती हैं .

Totka vigyan

Theses small prayog may induce a little change in your life if apply with faith , and slowly a big road of success waits for you.

1. just circles 7 times the neebu on a person (nazar dosh effected) and than cut the neebu in two pieces and through on any square.
2. Offer food to unmarried girls helps you to reduce mars dosh problem.
3. Offer the coconut as the total number of family person in any river, help to reduces dieses of husband and wife.
4. Never do jhadu at home after evening and never leave un clean pots (utensiuls) in the night, this will bring happiness and wealth in your home.
5. While going for exam touch the feet of elders in your home and light a earthen lamp with ghee at pooja room.
6. Chant 11 times " om nah shivay " you will get protection from any accident.
7. When blessing of pitra happens upon you and same things blessing of kuldevi or devta upon you, all the problem of personal life /professional life and physical if related get solved or reduces to much extent.
8. If one use 12 names of lakshmi while in pooja kaal and doing any good work , and became daily routine than automatically after some times he will get blessing of lakshmi.

9. While going outside to your home, just take three elaychi in your hand and chand "shreem shreem" and eat that , finance related problem get solved.

10. Place both side of main entrance of your home tulsi plant it will help to gain finance.

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

इसकी उपयोगिता से कोई भी वंचित नहीं रहना चाहेगा हमें जीवन की शैली में कुछ सुधार तो करना ही चाहिए साथ ही साथ कुछ आयुर्वेदिक उपचार को भी समझना चाहिए और इनमे से कुछ आपके काम यदि आते हैं तो इससे हमा री नहीं बल्कि आयुर्वेद की सार्थकता ही सिद्ध होती हैं

- नारियल पानी लू लगने के उपचार में लाभदायक होता हैं ,
- नारियल पानी पीने से व्यक्ति का पेट भी साफ़ रहता हैं
- नारियल पानी से मालिश यदि चेहरे की की जाये तो भी यह कान्ति वर्धक हैं
- वारिश के इस समय दही का प्रयोग न करे
- सर्दी या खांसी के समय गर्म पानी की भाप लेना भी लाभदायक होती हैं .

- नियमित दिनमे दो बार ठन्डे पानी से स्नान करना भी एनीमिया रोग से प्रभावित व्यक्ति के लिए लाभदायक होता हैं .
- प्रातः काल टहलना भी याददाश्त बढ़ने के लिए और स्वास्थ्य रहने के लिए भी लाभदायक रहता हैं
- नाखुनो को यदि १०/१५ मिनिट नमक मिले पानी में डुबोये रख जाये तो यह उनकी खूबसूरती के लिए लाभदायक होगा.
- थकने पर यदि नमक और नीबू मिले पानी में अपने पैर डुबोकर कुछ देर बैठे तो थकान दूर होगी.
- दांत के दर्द होने पर यदि हल्दी सर्सोंका तेल और नमक का मिश्रण लगाया जाये तो लाभदायक होगा .

Ayurveda

Every one want to be take the benefit of this ayurved, but we have to change our life style so that we can fit more and more and healthy. and if anyone of theses advices helps you so its not us but the importance of ayurved proved.

- Coconut water is useful in case person get heat stroke.
- Coconut water is also useful in stomach related problem.
- If face massage is done with coconut water that also be very helpful getting more radiance .
- In theses rainy season one should not use/eat dahi.
- Take bath two times in day with normal cold water is also helpful in anemia case patient .morning walk always be very helpful in improving memory and maintaining better health
- When khansi or cold affect you at that time taking vapors of water is also helpful.
- If nails are dip in salt mix water for 10/15 minute that proved to be very benefited for their beauty.
- If you get tired than dip your feet in salt and nibu mix water for some time that help you to regain energy.
In toothache time apply haldi and little bit sarso oil and very little salt that it help to reducePain..

In the End

आप सभी गुरु भाई बहिन और मित्रो के दिन प्रति दिन के बढ़ते हुआ स्नेह हमें लगातार और अधिक मेहनत को प्रेरित करता हैं अब ये अंक समाप्ति की ओर हैं, आपको ये अंक कैसा लगा , हम सभी को बिश्वास हैं की यह अंक आपके अपेक्षाओ पर खरा उतरा होगा .

इसी तरह हम सदैव आपके आशाओं पर खरे उतरें ,सदगुरुदेव भगवान से यही प्रार्थना हैं .

अगला अंक - तीव्र शक्ति तंत्र साधना एवं इतर योनी महाविशेषांक होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

With the ever increasing /growing your support and love/sneh gives us more and more strength to work hard to come up to your expectation ,we here,have a faith that this issue come up your expectation, like that we work for you all is the prayer to beloved sadgurudev ji.

Our next issue will be Teevra Shakti Tantra Sadhna Avam etar Yoni Maha Visheshank for details of that plz wait for related post in the blog.

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit blog

Nikhil-alchemy2.blogspot.com & yahoo group Nikhil alchemy

We

Are praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI GURUDEV